भारत की लोक कथाऐं–1

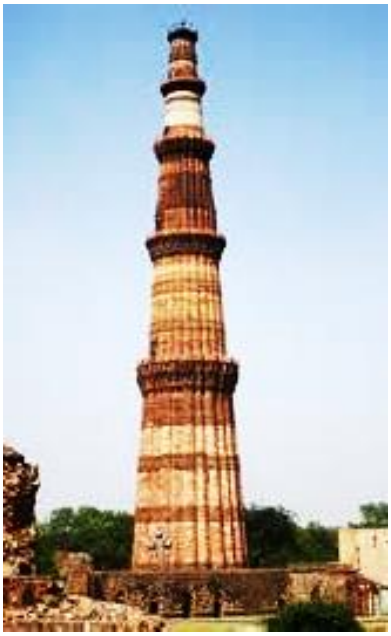

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Bharat Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of India-1)
Cover Page picture : Qutub Meenar, Delhi, India
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

भारत की लोक कथाऐं–1 5

1 कुँए का चीता 7

2 अन्धे और हाथी 11

3 बड़ी खरगोश जो भाग गयी 17

4 गीदड़ और मगर 22

5 शेर बनाने वाले 32

6 दोस्ती का जादू 37

7 बन्दर और मगर 41

8 बैल जो शर्त जीत गया 45

9 लड़ने वाले बटेर 49

10 बातूनी कछुआ 54

11 एक पैसे में सब 59

12 हाथी और चूहों का राजा 64

13 राजा और बेवकूफ बन्दर 69

14 पंचतन्त्र की एक कहानी 73

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

भारत की लोक कथाऐं–1

इस सीरीज़ में, यानी "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ में, भारत की लोक कथाऐं प्रकाशित करने का कोई इरादा नहीं था। पर मुझे भारत की कुछ बहुत सामान्य लोक कथाऐं ऐसी मिल गयीं जिनको मैंने यहॉ लिख्र लिया। पर अभी भी इन लोक कथाओं को इस सीरीज़ में प्रकाशित करना इस पोजैक्ट का कोई उद्देश्य नहीं है।

दुनियॉ के सात महाद्वीपों में से एशिया महाद्वीप सबसे बड़ा है। इसमें रूस देश इसको क्षेत्रफल में बड़ा बनाता है और चीन और भारत जैसे देश इसको जनसंख्या में बड़ा बनाते हैं। भारत देश की जनसंख्या चीन देश से दूसरे नम्बर पर आती है। भारत में भी इतने सारे तरह के लोग रहते हैं कि कहते हैं कि यहॉ हर सौ मील की दूरी पर ख्राना पीना. रहन सहन, भाषा आदि बदल जाते हैं, फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या।

भारत की लोक कथाओं का हम यह पहला संकलन प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में हम तुम्हारे लिये इस देश की कुछ बहुत ही सामान्य और लोकप्रिय लोक कथाऐं प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें से कई लोक कथाऐं शायद तुम लोगों ने सुनी भी होंगी पढ़ी भी होंगी। अगर इस तरीके से नहीं सुनी या पढ़ी होंगी तो किसी और तरीके से सुनी पढ़ी होंगी। ये लोक कथाऐं भारत के किसी एक प्रान्त की लोक कथाऐं नहीं हैं बल्कि सामान्यतया कही सुनी पढ़ी जाने वाली लोक कथाऐं हैं।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाऐं भारत की। ये इतनी सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से ख्रास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 कुँए का चीता[1]

एक बार एक चीता जंगल में आया और चिल्लाया — "मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे बहुत भूख लगी है।" यह सुन कर जंगल में रहने वाले तो सारे जानवर काँप गये।

चीता गुर्राया — "डरते क्यों हो। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम लोगों को इस तरह से न खाऊँ तो तुम लोग खाने के लिये मुझे एक जानवर रोज भेजोगे। और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं तुम सबको खा जाऊँगा।"

सब जानवरों ने आपस में बात की कि जो यह चीता कहता है हमें वह कर देना चाहिये नहीं तो यह हम सबको खा जायेगा। पर सबसे पहले किस जानवर को चीते के पास खाने के लिये भेजा जाये।

हिरन बोला — "मुझे नहीं।"

बकरी बोली — "मुझे नहीं।"

भेड़िया बोला — "मुझे नहीं।"

खरगोश बोला — "मैं जाऊँगा चीते के पास। और तुम लोग देखोगे कि चीता हममें किसी को नहीं खायेगा।"

---

[1] The Tiger in the Well – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=163
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[This story is very common and is told and heard in many countries in many flavors.]

कह कर वह कूद कर थोड़ी दूर तक गया और बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा जब तक कि वह पसीने से लथपथ नहीं हो गया। फिर वह चीते के पास दौड़ गया जहॉ वह अपने खाने के लिये किसी जानवर के आने का इन्तजार कर रहा था।

खरगोश चीते से बोला — "चीते जी चीते जी। मुझे बहुत अफसोस है कि मुझे आने में कुछ देर हो गयी। हुआ क्या कि मुझे रास्ते में एक दूसरा चीता मिल गया सो उस चीते से किसी तरह अपने आपको छुड़ा कर मुझे आपके पास आना पड़ा।

वह मुझे खाना चाहता था पर मैंने कहा कि तुम मुझे नहीं खा सकते क्योंकि मैं तो आपका खाना हूॅ। बड़ी मुश्किल से किसी तरह मैं उससे जान बचा कर भागा आ रहा हूॅ।"

चीता बोला — "दूसरा चीता? कौन सा दूसरा चीता? यहॉ कोई और भी चीता रहता है क्या?"

खरगोश बोला — "वह दूसरा चीता तो बहुत बड़ा था चीते जी। आपसे भी बहुत बड़ा। पर अब तो मैं उससे पीछा छुड़ा कर आ ही गया हूॅ सो अब आप मुझे खा सकते हैं।"

चीते ने पूछा — "क्या वह मुझसे भी बड़ा है?"

खरगोश फिर बोला — "जी हॉ सरकार, वह तो आपसे भी बड़ा है। वह मुझे खाना चाहता था पर मुझे उसे बहुत समझाना पड़ा कि मैं तो आपका खाना हूॅ। अब आप मुझे जल्दी से खा लीजिये नहीं तो अगर वह यहॉ भी आ गया तो... ।"

चीता कुछ सोच कर बोला — "अगर तुम मुझे उस दूसरे चीते को दिखा दो तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्श दूँगा।"

खरगोश बोला — "चलिये मैं अभी आपको उसके पास ले चलता हूँ। अभी तो वह वहीं होगा जहाँ मैं उसे छोड़ कर आया था।"

और यह कह कर वह उसको एक कुँए पर ले गया।

फिर बोला — "आप इस कुँए में झाँक कर देखिये तो आपको वह दूसरा चीता दिखायी दे जायेगा।"

चीते ने उस कुँए में झाँका तो उस कुँए की तली में उसको एक चीता दिखायी दिया। कम से कम उसको ऐसा लगा कि उस कुँए में एक चीता था।

जंगल के चीते ने पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

कुँए में से एक आवाज आयी — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"यह मेरा जंगल है।"

"यह मेरा जंगल है।"

"नहीं, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।"

"नही, यह तुम्हारा नहीं मेरा जंगल है।"

"मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

"मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

इस तरह जंगल का चीता ऊपर से चिल्लाता रहा और उसकी अपनी आवाज कुँए में से गूँज गूँज कर उसके पास तक वापस आती रही।

उसके ये जवाब उसको गुस्सा दिलाते रहे। जब उसको बहुत गुस्सा आ गया तो वह कुँए वाले चीते को खाने के लिये कुँए में कूद पड़ा और मर गया।

खरगोश खुशी खुशी कूदता हुआ यह खबर जंगल के दूसरे जानवरों को सुनाने चला आया। चीते के मरने पर जंगल में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं और खरगोश की बहुत तारीफ की गयी।

2 अन्धे और हाथी[2]

एक बार हिन्दुस्तान में छह अन्धे लोग रहते थे। हालॉकि वे सब अन्धे थे पर अपनी उम्र के हिसाब से वे सब बहुत अक्लमन्द थे।

बहुत सारे लोग उनसे अपनी परेशानियों का हल निकलवाने के लिये और सलाह लेने के लिये आते थे और उनकी अक्लमन्दी का फायदा उठा कर जाते थे।

दूसरे लोगों को तो वे बहुत ही शान्त लगते थे पर कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन अकेले में वे अपनी अक्लमन्दी के बारे में आपस में बहस न करते हों।

वे बात करते थे और बहस करते थे, वे बहस करते थे और फिर बात करते थे जब तक कि वे लोगों के पूछे हुए सवालों के जवाब पर एक राय नहीं हो जाते थे।

---

[2] The Blind men and the Elephant – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=18
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
John Godfrey Saxe wrote the poem "The Blind Man and the Elephant" in the 1800's and made it famous. This folktale is based on Indian and Chinese folktales. The poem is in the public domain and able to be used freely. It is interesting to research the poem further and see variations of the story that date back to the Han Dynasty in China from 202 BC - 220 AD. Check out the following site for more information on the history of this delightful tale:
http://www.noogenesis.com/pineapple/blind_men_elephant.html
[This story is very common to tell and to be heard in India. There this story is from Panchtantra. You may read some of the Panchtantra stories in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-panchtantra/index-panchtantra.htm]

एक दिन सुबह सुबह जब तक लोग उनकी सलाह माँगने के लिये उनके पास नहीं आये थे वे एक जंगल के रास्ते पर बात करते हुए चले जा रहे थे।

उनमें से एक आदमी बोला — "मुझे किसी हाथी की आवाज सुनायी दे रही है। हम लोग इन जंगली जानवरों के बारे में कई बार बात करते रहे हैं पर हम कभी इस बात पर एक राय नहीं हुए कि ये लगते कैसे हैं। चलो चल कर आज उसको छू कर देखते हैं और फिर देखते हैं कि कौन सही है और कौन गलत।"

कह कर वे आगे चलते रहे जब तक कि उनको यह नहीं लगा कि वे हाथी के काफी पास तक पहुँच गये हैं।

हाथी बहुत ही खतरनाक जानवर होते हैं क्योंकि जब वे आदमी को सूँघ लेते हैं तो वे बेचारे परेशान हो कर डर जाते हैं। वे अक्सर लोगों पर हमला कर बैठते हैं और उनको कुचल कर मार देते हैं।

अब क्योंकि इन अन्धे लोगों ने कभी हाथी की ताकत और साइज़ को देखा नहीं था इसलिये ये बड़ी शान्ति से चलते हुए उसके पास तक पहुँच गये।

वह हाथी भी तब तक बिल्कुल चुपचाप खड़ा रहा जब तक कि उन लोगों ने उसको छुआ नहीं और उससे कुछ सीख नहीं लिया।

पहला आदमी बहुत लम्बा था सो जब वह उसके छूने के लिये आगे बढ़ा तो वह गिरने लगा। गिरते गिरते उसके हाथ हाथी के एक तरफ जा लगे।

उसने अपने हाथ उसके शरीर पर ऊपर से नीचे और इधर से उधर फिराये और सब तरफ से उसने उसको एकसार सख्त ही पाया। कहीं कहीं उसको कीचड़ भी महसूस हुई।

सन्तुष्ट हो कर वह बोला — "अब मेरी समझ में आ गया कि हाथी दीवार जैसा होता है।"

जब दूसरे अन्धे आदमी के हाथ हाथी से छुए तो उसको हाथी बिल्कुल ही अलग लगा। असल में वह हाथी के अगले वाले हिस्से के सामने खड़ा था।

जैसे ही उसने उसको छुआ तो हाथी ने उसको देखने के लिये अपना मुँह थोड़ा सा उसकी तरफ घुमाया और उस आदमी के हाथ में उसकी सूँड़ आ गयी।

उस आदमी ने उसकी सूँड़ की गोल चिकनी सतह महसूस की। उसने उसको फिर अपने दोनों हाथों के घेरे में ले कर देखा तो ऊपर से तो वह बहुत मोटी थी सो उसके हाथों के घेरे में नहीं आयी पर नीचे जाते जाते वह पतली हो गयी और उसके हाथों के घेरे में आ गयी।

नीचे जा कर वह गोल हो कर खत्म हो रही थी तो वह चिल्लाया — "ओह, यह हाथी तो भाले की तरह से है।"

तीसरा आदमी उसी रास्ते पर चला जा रहा था जिस पर हाथी चल रहा था। जब उसको लगा कि वह हाथी के पास आ गया है सो उसने भी उसको छूने के लिये अपने हाथ बढ़ाये।

उसके छूते ही हाथी ने भी उसको देखना चाहा तो उसने भी अपनी सूँड़ से उसको छुआ। उस आदमी के हाथ हाथी की सूँड़ के चारों तरफ लिपट गये तो हाथी ने भी अपनी सूँड़ इधर उधर हिलायी। इससे उसकी सूँड़ आदमी के हाथों को मलने लगी।

उस आदमी ने पीछे हटना चाहा तो हाथी ने अपनी सूँड़ से उसके गालों को छू लिया। वह बोला — "मुझे लगता ही कि हाथी तो सॉप जैसा है।"

चौथा आदमी लम्बाई में छोटा था सो वह केवल हाथी की टॉगों तक ही पहुँच पाया। उसने उसके घुटने छुए और उनके चारों तरफ हाथ फिराये तो उसको लगा कि वे तो गोल और बहुत खुरदरे थे।

वह अपने हाथ घुटनों से नीचे जमीन तक ले गया फिर उनको ऊपर तक ले गया जहॉ वे उसके शरीर से जुड़ते थे। कुछ सोच कर वह बोला — "मेरे खयाल से तो हाथी पेड़ जैसा है।"

पॉचवॉ अन्धा आदमी इन सब लोगों की बातें सुन रहा था और अब तक बिल्कुल चुपचाप खड़ा था। उसने हाथी को अभी तक छुआ भी नहीं था।

अचानक उसने अपने चेहरे पर हवा का बहुत ही मामूली सा झोंका महसूस किया। इसके साथ ही उसको अपने चेहरे के सामने कुछ हिलता सा भी सुनायी दिया।

उसने हाथ बढ़ा कर उस हिलती हुई चीज़ को पकड़ने की कोशिश की तो उसके हाथ में हाथी का कान आ गया। वह तो

बहुत ही पतला था। इतना पतला कि उसके अँगूठे और उँगली के बीच में आ रहा था और वह उसको दबा भी सकता था।

पर वह ऊपर से ले कर नीचे तक और दॉये से ले कर बॉये तक बड़ा इतना था कि उससे काफी हवा आ रही थी। जब वह उस को पकड़ने की कोशिश कर रहा था कि हाथी उसको इधर उधर हिलाता रहा और इससे उसको हवा लगती रही।

यह सोच कर वह बोला — "लगता है कि हाथी पंखे जैसा है।"

छठा अन्धा आदमी हाथी को पूरा पार कर गया। अपने दोस्तों की बात सुन सुन कर उसको हाथी की शक्ल का कुछ कुछ अन्दाजा लग गया था।

वह चलता चलता हाथी के पीछे की तरफ आ गया। तभी हाथी ने अपनी पूँछ हिलायी जो उस आदमी की नाक पर जा कर लगी।

उस आदमी ने तुरन्त ही अपने हाथ आगे बढ़ाये और उसकी पूँछ पकड़ ली। वह लम्बी और पतली थी और उसके किनारे पर बालों का एक गुच्छा था।

जब उसने हाथी की पूँछ खींची तो पीछे से हाथी की हवा निकल गयी। उस आदमी ने हवा में सूँघा और बुरा सा चेहरा बना कर बोला — "हालॉकि यह कहना तो ठीक नहीं लगता पर मुझे तो हाथी एक बदबूदार रस्सी जैसा लगता है।"

जब सब लोग अपना अपना तजुरबा ले कर घर वापस आ गये तो हाथी की शक्ल के ऊपर बहुत दिनों तक बहस चलती रही।

हर आदमी यही सोचता था कि हाथी के बारे में वह जो कुछ जानता था वही सही था जबकि सभी लोग गलत थे।

यही अक्ल के साथ भी होता है कि सबसे ज़्यादा अक्ल वाले लोग भी कभी कभी केवल कहीं कहीं सही होते हैं और ज़्यादातर गलत होते हैं।

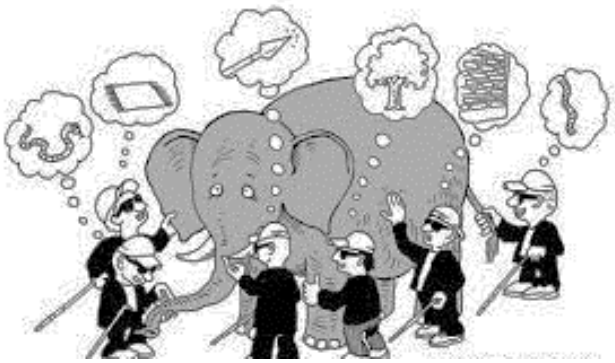

3 बड़ी खरगोश जो भाग गयी[3]

एक बार एक बहुत ही डरपोक मिस बड़ी खरगोश[4] थी। उसको हमेशा ही यह डर लगा रहता था कि उसका कुछ बुरा हो जायेगा। वह हमेशा कहा करती थी कि "अगर आसमान गिर पड़े तो मेरा क्या होगा?"

इस बात को वह इतनी ज़्यादा बार कहा करती थी कि उसको अब यह विश्वास होने लगा था कि आसमान वाकई उसके सिर पर गिर पड़ेगा।

एक दिन वह हरी हरी घास खा रही थी कि एक बड़ा सा फल एक ज़ोर की आवाज के साथ पेड़ से नीचे जमीन पर गिर गया।

एक तो वह बेचारी पहले से ही बहुत परेशान सी थी पर इस फल के गिरने पर तो वह बहुत ही परेशान हो गयी और उसने सिर उठा कर आसमान की तरफ देखा तो उसके मुँह से निकला — "अरे, यह तो आसमान गिर रहा है।"

---

[3] The Hare That Ran Away – a folktale from Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=67
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
This story can be credited to storyteller Marie Shedlock. This version was adapted from "The Hare That Ran Away" in the book "Eastern Stories and Legends" by Marie Shedlock, Copyright 1920. In Ms. Shedlock's version of the story, and in earlier versions, the hare is worried that the "earth is falling in" rather than that the "sky is falling." Perhaps shifting plate tectonics and earthquakes in India where the story originated caused the story to be originally be told with the earth falling in.

[4] Hare is a rabbit like animal but it is a bit bigger in size. See its picture above.

वह वहाँ से जितनी तेज़ भाग सकती थी भाग ली और अपने भाई बड़े खरगोश के घर पहुँच गयी।

भाई बड़े खरगोश ने पूछा — "अरे तुम कहाँ भागी जा रही हो बहिन बड़ी खरगोश?"

मिस बड़ी खरगोश बोली — "मेरे पास रुकने और बात करने का समय नहीं है भैया आसमान गिर रहा है और मैं दूर भाग रही हूँ।"

भाई बड़े खरगोश ने उसको भाग कर जाते हुए देख कर दोहराया — "आसमान गिर रहा है?" कह कर वह यह सोच कर हँसा कि वह कितनी बेवकूफ थी।

वहीं पास में खड़े एक छोटे से खरगोश ने बड़े खरगोश से पूछा — "तुमने क्या कहा?"

बड़ा खरगोश बोला — "मैंने कहा कि आसमान गिर रहा है।" और फिर उसने उस छोटे खरगोश को यह समझाने की कोशिश की कि वह मिस खरगोश कितनी बेवकूफ थी जो यह कह रही थी।

पर तब तक तो बहुत देर हो चुकी थी। छोटे खरगोश ने तो मिस खरगोश को डर कर भागते हुए पहले से ही देख लिया था और अब उसने बड़े भाई को भी यह कहते सुन लिया कि आसमान गिर रहा है।

सो वह भी वहॉ से भाग लिया और जो कोई खरगोश उसको रास्ते में मिलता गया वह उन सबसे यही कहता गया कि "भागो भागो, आसमान गिर रहा है, आसमान गिर रहा है।

यह सुन कर एक एक करके वे सारे खरगोश यह कहते हुए इधर उधर भागने लगे कि "आसमान गिर रहा है, आसमान गिर रहा है।"

बड़े बड़े जानवर तो बस यह देख रहे थे कि इतने सारे खरगोश चिल्लाते हुए भागे जा रहे थे कि "आसमान गिर रहा है। आसमान गिर रहा है।"

जल्दी ही वे बड़े जानवर भी यही चिल्लाते हुए भागने लगे। पहले हिरन, फिर भेड़ और फिर हाथी। हर जानवर यही चिल्लाता भागा जा रहा था "आसमान गिर रहा है। आसमान गिर रहा है।"

जानवरों की भीड़ भागते भागते एक अक्लमन्द बूढ़े शेर के पास से गुजरी तो शेर गरजा — "रुक जाओ। बहुत शोर मचा लिया तुम लोगों ने। क्या बात है यह सब क्या हो रहा है?"

हाथी बोला — "आसमान गिर रहा है।"

शेर ने पूछा — "तुमको कैसे पता?"

हाथी बोला — "मैंने चीते के मुॅह से सुना।"

जब चीते से पूछा गया कि उसने यह कहॉ से सुना तो वह बोला — "मैंने ऊॅट के मुॅह से सुना।"

ऊँट बोला — "मैंने जंगली सूअर के मुँह से सुना जिसने भेड़ के मुँह से सुना। भेड़ ने हिरन से सुना और हिरन ने भागते हुए हजारों खरगोशों से सुना।"

खरगोशों ने एक छोटे खरगोश की तरफ इशारा कर दिया कि उन्होंने तो यह उसके मुँह से सुना।

छोटे खरगोश ने कहा कि उसने बड़े भाई से सुना था।

बड़े भाई ने उन सबको वह बता दिया जो कुछ हुआ था। फिर बोला — "मैंने बहिन बड़ी खरगोश को यह कहते सुना तो जरूर था कि आसमान गिर रहा है पर साथ में छोटे खरगोश को यह भी समझाने की कोशिश की कि वह मिस खरगोश कितनी बेवकूफ थी। पर उसने तो मेरी पूरी बात ही नहीं सुनी और यह अफवाह उड़ा दी।"

शेर ने मिस बड़ी खरगोश से कहा — "अब यह बात तुम्हारे ऊपर आ कर पड़ती है। अब तुम बताओ कि तुमने किससे सुना?"

मिस बड़ी खरगोश बोली — "मैंने यह किसी से सुना नहीं बल्कि मैंने तो खुद आसमान को गिरते हुए देखा।"

शेर ने पूछा — "तुमने आसमान को गिरते हुए देखा? कहाँ?"

"पेड़ के पास।"

"आओ मेरे साथ। चलो हम साथ साथ देखेंगे कि वहाँ क्या गिरा?"

"मैं नहीं जाती मुझे डर लगता है।"

तब शेर ने मिस बड़ी खरगोश को उठा कर अपनी पीठ पर रखा और बोला — "चलो हम दोनों साथ साथ चलेंगे और देखेंगे कि आसमान कहॉ गिरा है। तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।"

फिर वह उस पेड़ के पास गया जिस पेड़ से फल टूट कर गिरा था और उसे उस मिस बड़ी खरगोश को दिखाया कि किस तरह पेड़ से केवल एक फल गिरा था जिसकी केवल आवाज से वह डर गयी थी। आसमान नहीं गिरा था।

शेर बोला — "अब जो मैं कहता हूँ उसे मेरे बाद दोहराओ "आसमान नहीं गिर रहा है।"

मिस बड़ी खरगोश ने दोहराया — "आसमान नहीं गिर रहा है।"

शेर मिस बड़ी खरगोश को अपनी पीठ पर बिठाये वापस जानवरों की भीड़ की तरफ मुड़ा और मिस बड़ी खरगोश से बोला — "एक बार फिर कहो "आसमान नहीं गिर रहा है।"

मिस बड़ी खरगोश फिर बोली — "आसमान नहीं गिर रहा है।"

बस उसके बाद एक एक करके फिर सब जानवर गाने लगे — "आसमान नहीं गिर रहा है, आसमान नहीं गिर रहा ह।"

और गाते गाते वे सब अपने घरों को जाने लगे।

और आसमान नहीं गिरा।

4 गीदड़ और मगर[5]

एक छोटा गीदड़ शैलफिश[6] खाने का बड़ा शौकीन था, खास करके केंकड़ों का और दूसरे समुद्री सीपी जानवरों का।

एक बार उसने बिना कुछ देखे हुए अपना पंजा नदी में एक शैलफिश पकड़ने के लिये रखा – जो तुमको तो कभी नहीं करना चाहिये। तो ज़रा सोचो कि क्या हुआ....?

एक मगर उस समय नदी के किनारे कीचड़ में बैठा हुआ था। उसकी ऑखें कीचड़ से ढकी हुई थीं पर उसने अपनी जीभ पर कुछ महसूस किया सो "फटाक"। मगर ने गीदड़ का पंजा अपने जबड़े में दबा लिया।

अब गीदड़ को पता चल गया कि मगर अपना शिकार कैसे पकड़ता है। वह पहले उसको पकड़ता है, फिर वह उसको नदी में खींचता है, फिर वह उसको कीचड़ के पानी में घुमा घुमा कर वहीं डुबो देता है और जो कुछ भी वह पकड़ लेता है वह वही खा लेता है।

---

[5] The Jackal and the Alligator – a folktale from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=197
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[6] Shellfish – popular name for certain edible mollusks, for example, oysters, clams, and scallops etc

गीदड़ को अब बहुत जल्दी सोचना था कि वह उससे कैसे बचे नहीं तो वह मगर का शिकार बन जाता।

सो उसने हॅसना शुरू किया — "बूढ़ा मगर बहुत होशियार नहीं है। मुझे बहुत खुशी है कि मगर ने वह डंडी पकड़ ली है जो मैंने अपने पंजे की जगह पानी में डाली थी। मुझे उम्मीद है कि मगर को अपने मुॅह में लकड़ी के फॉसें बहुत अच्छी लगेंगी।"

मगर नदी के किनारे दूर कीचड़ में छिपा हुआ था सो वह यह नहीं देख पाया कि उसने क्या पकड़ा है।

गीदड़ की बात सुन कर मगर को यह तो पता चल गया कि निश्चित रूप से उसको लकड़ी की फॉसें नहीं खानी सो उसने अपना मुॅह खोल दिया और गीदड़ उसके मुॅह में से निकल गया।

मगर के मुॅह में से निकल कर गीदड़ फिर हॅस दिया — "ओ मिस्टर मगर, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद जो तुमने मुझे अपने मुॅह में से बाहर जाने दिया। तुम तो बहुत ही दयालु हो।"

यह सुन कर मगर तो अपने आपे से बाहर हो गया और गीदड़ वहॉ से जितनी जल्दी भाग सकता था भाग गया। मगर ने आगे मुॅह करके उसको पकड़ना भी चाहा पर वह उसको पकड़ नहीं पाया।

इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि कई बार उसने अपनी पूॅछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर एक हफ्ते तक नदी पर नहीं आया। पर उसका मन फिर से शैलफिश खाने को करने लगा। तो उसको तो बस नदी पर जाना था और खाने के लिये एक शैलफिश ढूँढनी थी।

सो वह फिर नदी के किनारे आया और नदी के किनारे पर चारों तरफ देखा पर उसको कोई ऐसा दिखायी नहीं दिया जो बूढ़े मगर जैसा दिखायी देता हो।

पर फिर भी वह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। सो गीदड़ अपने आपसे ही ज़ोर से बोला — "जब मुझे किनारे पर कोई केंकड़ा दिखायी नहीं देता या मुझे वे पानी में से बाहर की तरफ झाँकते दिखायी नहीं देते तब उनको पकड़ने के लिये मैं अपना पंजा पानी में डालता हूँ।"

उस समय वह बूढ़ा मगर नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं ज़रा सी अपनी नाक पानी के बाहर निकाल लूँ तो वह केंकड़े जैसी लगेगी। फिर जब उसको पकड़ने के लिये गीदड़ अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

यह सोच कर मगर ने अपने मुँह का अगला हिस्सा बस ज़रा सा ही पानी के बाहर निकाला और गीदड़ के पानी में पंजा रखने का इन्तजार करने लगा।

गीदड़ ने भी यह सब देख लिया और बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा।"

कह कर वह फिर हँसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वह वहाँ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं सका। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार अपनी पूँछ पानी में फटकारी।

उसके बाद गीदड़ फिर दो हफ्ते तक वहाँ नहीं आया। पर दो हफ्ते बाद फिर उसको नदी के किनारे की शैलफिश खाने की इच्छा हो आयी। असल में वे खाने में इतनी स्वादिष्ट होती थीं कि उससे रुका नहीं गया और वह फिर नदी के किनारे पहुँच गया उनको खाने के लिये।

उसने फिर नदी के किनारे इधर उधर देखा पर उसको वहाँ मगर जैसा कोई दिखायी नहीं दिया पर अब उसने यह सीख लिया था कि अब उसे कोई खतरा मोल नहीं लेना।

सो गीदड़ फिर अपने आपसे ज़ोर से बोला — "जब मैं किनारे पर कोई केंकड़ा नहीं देखता या उनको पानी में से बाहर झाँकते नहीं देखता तब मैं उनको पानी के अन्दर से बुलबुले बनाते देखता हूँ।

वे बुलबुले मुझे यह बताते हैं कि वे रसीले केंकड़े कहाँ हैं। फिर मैं अपना पंजा पानी में डाल कर उनको पकड़ लेता हूँ और बस उन्हें खा जाता हूँ।"

वह बूढ़ा मगर उस समय भी नदी की तली में कीचड़ में छिपा हुआ था। उसने सोचा — "अगर मैं अपनी नाक से थोड़े से बुलबुले पानी में बना दूँ तो वह केंकड़े जैसे लगेंगे।

फिर जब गीदड़ उनको पकड़ने के लिये अपना पंजा पानी में रखेगा तो मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

यही सोच कर मगर ने अपनी नाक से पानी में बुलबुले बनाने शुरू कर दिये – पौप, पौप, पौप।

छोटे गीदड़ ने उन बुलबुलों को देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और जाना पड़ेगा। अब इसके बाद मैं यहाँ नहीं आऊँगा।"

कह कर वह फिर हँसा और बोला — "और हाँ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।" और फिर जितनी तेज़ी से वहाँ से वह भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह इतना गुस्सा हुआ कि उसने फिर कई बार

अपनी पूँछ पानी में फटकारी और इस बार तो अपना मुँह भी कई बार खोला और बन्द किया और पैर भी पटके।

उसके बाद गीदड़ उस नदी के किनारे फिर नहीं गया हालाँकि उसकी केंकड़े खाने की बहुत इच्छा हो रही थी।

अब उसने एक बागीचा ढूँढ लिया था जहाँ जंगली अंजीर के पेड़ लगे हुए थे। उन पेड़ों की अंजीरें बहुत ही स्वादिष्ट और मीठी थीं सो वह उस बागीचे में पेड़ों से गिरी हुई अंजीरें खाने के लिये रोज जाने लगा।

बूढ़े मगर को भी यह पता चल गया कि छोटा गीदड़ अब नदी पर नहीं आता बल्कि अपना खाना खाने बागीचे जाने लगा है तो उसने भी उसी बगीचे में जाने का निश्चय किया कि वह भी वहीं जा कर उस छोटे गीदड़ के आने का इन्तजार करेगा।

उसको उस गीदड़ को जरूर खाना था चाहे उसको उसे आखीर में ही क्यों न खाना पड़े। सो वह नदी में से बाहर निकला और बागीचे की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर उसने अंजीर का सबसे बड़ा पेड़ ढूँढा और उसके नीचे अंजीरों का एक बहुत बड़ा ढेर बनाया और उसके पीछे छिप कर बैठ गया।

रोज की तरह गीदड़ उस दिन भी वहॉ आया पर अब तक वह होशियार रहना सीख गया था सो जब उसने अंजीरों का एक बहुत बड़ा ढेर देखा तो उसने सोचा कि यह ढेर तो मगर के छिपने के लिये एक बहुत ही अच्छी जगह हो सकती है।

सो वह ज़ोर से बोला — "छोटी छोटी अंजीरें जो मुझे सबसे अच्छी लगती हैं वे वह वाली अंजीरें होती हैं जो मोटी, पकी हुई और रसीली होती हैं और जो जब हवा उनको इधर उधर हिला कर गिराती है तो हवा से वे अपने आप पेड़ से गिर जाती हैं। ये ढेर में पड़ी अंजीरें तो ठीक नहीं हैं खराब हैं।"

मगर ने सोचा — "मुझे थोड़ा सा हिलना पड़ेगा ताकि ऐसा लगे कि हवा इन अंजीरों को हिला रही है। जब वह छोटा गीदड़ इन अंजीरों को हिलते देखेगा तो इनको खाने आयेगा तब मैं उसको पकड़ लूँगा और खा लूँगा।"

सो मगर थोड़ा सा हिला जिससे वे अंजीरें इधर उधर उड़ कर गिरनी शुरू हुईं।

छोटे गीदड़ ने उन अंजीरों को इधर उधर गिरते हुए देखा तो बोला — "यह दिखाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद मगर जी कि आप कहॉ हैं। मुझे लगता है कि मुझे अपने खाने के लिये अब कहीं और ही जाना पड़ेगा।"

वह फिर अपनी हॅसी हॅसा और बोला — "और हॉ मुझे छोड़ देने के लिये भी आपको धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु

हैं।" और यह कह कर फिर जितनी तेज़ी से वह वहॉ से भाग सकता था भाग लिया।

मगर फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पकड़ नहीं पाया। इस बात से वह फिर इतना गुस्सा हुआ कि उसने कई बार अपनी पूँछ फटकारी, कई बार अपना मुँह खोला और बन्द किया, कई बार पैर भी पटके और इस बार तो अपनी ऑखें भी घुमायीं पर कुछ नहीं हुआ।

पर मगर आज इतना गुस्सा और भूखा था कि वह गीदड़ का और इन्तजार नहीं कर सका। वह उसके घर तक पहुँच गया। उसने अपने बड़े शरीर से गीदड़ के घर के छोटे से दरवाजे में घुसने की पूरी कोशिश की।

जब वह उसके घर के अन्दर पहुँच गया तो वह घूमा और दरवाजे की तरफ मुँह करके अपना बड़ा सा मुँह खोल कर गीदड़ के घर आने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर बाद गीदड़ घर आ गया पर वह जानता था कि कहीं जाने से पहले इधर उधर देखना चाहिये सो उसने अपने घर में घुसने से पहले अपने घर के सामने की जमीन देखी।

उसको लगा कि उसके ऊपर से कोई भारी सी चीज़ घिसट कर उसके घर के अन्दर तक चली गयी है।

फिर उसने अपना दरवाजा देखा तो उसने देखा कि उसका दरवाजा भी दोनों तरफ से कुछ टूटा हुआ था। इससे उसको लगा

कि कोई काफी बड़ी चीज़ उसके अन्दर से हो कर गयी थी। उसने सोचा कि यकीनन ही मगर उसके घर के अन्दर है।

गीदड़ ज़ोर से चिल्लाया — "अरे बड़ी अजीब सी बात है। जब भी मैं घर आता हूँ तो मेरा घर मुझसे बोलता है। मेरा स्वागत करता है पर आज इसे क्या हुआ? अरे ओ घर, रोज की तरह तुम मुझसे हलो क्यों नहीं बोलते?

तुम तो हमेशा ही यह कहते हो "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।" और इससे मुझे लगता कि यहाँ सब ठीक है और मैं अन्दर आ जाता हूँ। पर आज तुम मुझसे बोले ही नहीं सो मुझे लगता है कि मेरे घर के साथ कुछ गड़बड़ है।"

बूढ़े मगर ने सोचा — "मुझे इस घर की तरह से बात करने का बहाना करना चाहिये ताकि छोटा गीदड़ घर के अन्दर आ सके।"

सो वह बड़ी मीठी सी आवाज में बोला — "हलो छोटे गीदड़। इस घर में स्वागत है तुम्हारा।"

यह सुन कर तो छोटा गीदड़ बहुत ही डर गया। अब उसको पूरा विश्वास हो गया था कि घर के अन्दर वह मगर ही था। उसको यह भी पता चल गया कि वह मगर उसको खाये बिना नहीं रहेगा।

छोटे गीदड़ ने सोचा — "अबकी बार मुझे इस मगर का खात्मा कर ही देना चाहिये इससे पहले कि यह मेरा खात्मा करे।

सो वह चिल्ला कर बोला — "मुझसे बात करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद ओ मेरे छोटे से घर। मुझे तुम्हारी आवाज सुन कर बहुत खुशी हुई।

मैं अभी अन्दर आता हूँ। मैं ज़रा आग जलाने के लिये थोड़ी सी लकड़ी ले आऊँ ताकि मैं अपना खाना पका सकूँ। फिर मैं अपने दोस्तों को भी खाने के लिये बुलाऊँगा।"

यह सुन कर मगर ने सोचा — "वाह यह तो बड़ा ही अच्छा रहेगा। गीदड़ के साथ साथ मुझे उसके दोस्त भी खाने के लिये मिलेंगे।" ऐसा सोच कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं और शाम के खाने का इन्तजार करने लगा।

उधर छोटा गीदड़ वहॉ से जंगल चला गया। उसने बहुत सारी जलाने वाली लकड़ी इकट्ठी की और ला कर अपने दरवाजे पर और घर के चारों तरफ उनका ढेर लगा दिया।

फिर उनमें उसने आग लगा दी। जब उन लकड़ियों ने आग पकड़ ली तब वह अपनी हॅसी हॅसा और बोला — "मुझे छोड़ देने के लिये धन्यवाद मगर जी। आप कितने दयालु हैं।"

आग जलती रही जब तक कि उसने मगर को पूरी तरह भून कर नहीं रख दिया। उसके बाद छोटे गीदड़ ने अपने दोस्तों को बुलाया और मगर की दावत की। अब वह नदी पर शैलफ़िश और बागीचे में अंजीर खाने के लिये आजाद था।

5 शेर बनाने वाले[7]

बहुत पहले की बात है कि एक गॉव में चार ब्राह्मण बालक रहते थे। वे आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे और सभी बहुत अक्लमन्द थे। पर जिस तरीके से उनकी अक्लमन्दी उनके बरताव से झलकती थी वह सबकी अलग अलग थी।

उनमें से तीन दोस्त तो बहुत पढ़े लिखे थे। उनको जो कुछ पढ़ने को मिल जाता वे वही पढ़ लेते और आपस में कई बातों पर बहस करते। पर उनके पास दुनियॉदारी की अक्ल की बहुत कमी थी।

चौथे दोस्त के पास स्कूल की पढ़ाई तो ज़्यादा नहीं थी पर उसके पास सामान्य ज्ञान[8] बहुत था। जब वह छोटा था तभी से उसको काम करना पड़ा था इसलिये न तो वह स्कूल जा सका और न ही वह ज़्यादा पढ़ लिख सका।

पर पढ़ाई लिखाई और अक्लमन्दी किसी की क्या सहायता कर सकती है जहॉ लोग बहुत गरीब हों और जहॉ लोग पैसा न कमा सकते हों।

---

[7] The Lion Makers – a story from Panchtantra from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=69
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
Intelligence and education is baseless without common sense. This is the subject matter of this story.
[Other Panchtantra stories can be read in English at the Web Site : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-panchtantra/index-panchtantra.htm]

[8] Translated for the words “Common Sense”

सो उन लोगों ने दूर देश में अपनी किस्मत आजमाने की सोची और वे एक लम्बे सफर पर निकल पड़े।

कुछ दूर जाने के बाद सबसे बड़े दोस्त ने उस चौथे दोस्त की तरफ देखते हुए कहा — "हममें से एक हमारे जैसा नहीं है। वह हमारे जैसा पढ़ा लिखा नहीं है उसके पास तो केवल सामान्य ज्ञान है।

बिना पढ़ाई लिखाई के कोई आदमी अमीर नहीं बन सकता। मुझे नहीं लगता कि हमको अपनी कमाई उसके साथ बॉटनी चाहिये।"

दूसरे दोस्त ने पहले दोस्त की तरफ देखा और बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। हमारा यह दोस्त पढ़ा लिखा नहीं है। सो बजाय इसके कि हम अपनी अक्लमन्दी से कमायी हुई कमाई इसके साथ बॉटें हमको इसे घर भेज देन चाहिये।"

तीसरा दोस्त बोला — "नहीं नहीं। दोस्तों से बरताव करने का यह कोई तरीका नहीं है। हम लोग बचपन से ही एक साथ रहे हैं। इसलिये हम आज भी इसको अपने साथ ही रखेंगे और अपनी कमाई में से बराबर का हिस्सा इसको देंगे।"

काफी बहस के बाद पहले दो दोस्त इस बात पर राजी हो गये कि वे अपने चौथे दोस्त को घर वापस नहीं भेजेंगे और उन्होंने उस चौथे दोस्त को भी अपने साथ ही रखा।

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहॉ एक मरे हुए शेर की हड्डियॉ पड़ी हुई थीं।

पहला दोस्त बोला — "यही समय है जब हम अपने बे पढ़े लिखे दोस्त को इस बात का सबूत दे सकते हैं कि हम कितना जानते हैं।

ये किसी मरे हुए जानवर की हड्डियॉ हैं। देखते हैं कि जो कुछ हमने सीखा है उससे हम इसको ज़िन्दा कर सकते हैं या नहीं।"

वह फिर बोला — "मुझे मालूम है कि हड्डियों को किस तरह जोड़ कर उसका ढॉचा बनाया जाता है।"

इतना कह कर उसने वहॉ पड़ी हड्डियों को जोड़ कर उसका ढॉचा बना दिया।

दूसरा दोस्त भी अपनी पढ़ाई दिखाने में पीछे नहीं रहना चाहता था सो बोला — "मैं इस हड्डी के ढॉचे के ऊपर मॉस चढ़ा सकता हूॅ और उसके ऊपर खाल चढ़ा सकता हूॅ।"

इतना कह कर उसने उस ढॉचे के ऊपर मॉस और खाल चढ़ा दी और उसमें खून दौड़ा दिया। अब वह शेर बन गया था।

जैसे ही उसने यह किया तो तीसरा दोस्त बोला कि मैं इसमें जान डाल सकता हूॅ।

जैसे ही तीसरा दोस्त यह बोला तो चौथा दोस्त बोला — "दोस्तो, मैं मानता हूॅ कि तुम लोगों ने किताबों और स्कूल में मुझसे

बहुत ज़्यादा पढ़ा लिखा और सीखा है पर मेरा सामान्य ज्ञान यह कहता है कि हमें इस शेर को ज़िन्दा नहीं करना चाहिये।

मेरा विश्वास है कि इसको ज़िन्दा करने में हम लोगों की कोई अक्लमन्दी नहीं हैं। अगर यह वाकई ज़िन्दा हो गया तो यह हमको खाना चाहेगा। क्या तुम लोग यह चाहते हो कि हम लोग शेर का शिकार बनें?"

यह सुन कर पहले तीन दोस्त नाराज हो गये। वे बोले — "यह जानते हुए भी हमने तुमको अपने साथ आने दिया कि तुम हम सब में सबसे कम पढ़े लिखे हो। तुम बहुत ही कम जानते हो फिर भी तुम यह दावा कर रहे हो कि तुम हमसे ज़्यादा जानते हो?"

चौथा दोस्त बोला — "मैंने वही कहा जो मेरे सामान्य ज्ञान ने मुझसे कहा। पर अगर तुम लोग इसी बात पर अड़े हुए हो कि तुम लोगों को इसको ज़िन्दा करना है तो ज़रा रुको पहिले मैं ज़रा पेड़ पर चढ़ जाऊँ।"

कह कर वह चौथा दोस्त तुरन्त ही पास में लगे एक पेड़ पर चढ़ा गया।

जब वह चौथा दोस्त पेड़ पर चढ़ गया तो तीसरे दोस्त ने उस शेर के शरीर में आत्मा डाल दी। जैसे ही शेर के शरीर में आत्मा पड़ी उसने साँस लेना शुरू किया और ज़ोर से दहाड़ मारी और उन तीनों दोस्तों को खा लिया जो जमीन पर खड़े थे।

भरे पेट शेर का पेड़ पर चढ़ना मुश्किल था सो वह चौथे दोस्त को नहीं खा सका। वह चौथा दोस्त जो बे पढ़ा लिखा था केवल अपने सामान्य ज्ञान की सहायता से बच कर अपने गॉव वापस लौट आया।

6 दोस्ती का जादू[9]

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक झील के किनारे चार बहुत अच्छे दोस्त रहते थे – चूहा, कौआ, कछुआ और हिरन।

रोज वे उस झील पर पानी पीने के लिये आया करते थे और रोज वे एक दूसरे को अच्छी अच्छी कहानियॉ सुनाया करते थे।

एक दिन हिरन वहॉ पानी पीने नहीं आया तो चूहा, कौआ और कछुआ तीनों उसके बारे में चिन्ता करने लगे।

कौआ बोला — "आज सुबह मैंने जंगल में एक शिकारी देखा था। हो सकता है कि हिरन उसी से घायल हो गया हो।"

चूहा बोला — "तो ऐसा करो कि तुम जंगल के ऊपर उड़ो और हमारे दोस्त हिरन को ढूँढने की कोशिश करो।"

सो कौआ जंगल के ऊपर उड़ चला। कुछ पल बाद ही उसने हिरन को रस्सी से बने एक जाल में फॅसा देखा।

वह तुरन्त ही वापस अपने दोस्तों के पास उनकी सहायता लेने के लिये आया और उनको बताया कि हिरन तो रस्सी से बने एक जाल में फॅसा पड़ा है। अब उसको उस जाल से छुड़ाना है।

सारे जानवर वहॉ पहुँच गये जहॉ हिरन फॅसा पड़ा था। चूहे ने अपने तेज़ दॉतों से हिरन के जाल को काटना शुरू कर दिया।

---

[9] The Magic of Friendship – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=226
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

कौए ने अपनी चोंच से रस्सियों के उन टुकड़ों को हटाना शुरू कर दिया। और कछुए ने हिरन से बातें करना शुरू कर दिया ताकि वह परेशान न हो।

हिरन ने पूछा — "तुम लोग यहॉ क्यों आये हो?"

कछुआ बोला — "दोस्त लोगों को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये। हम तुम्हारे दोस्त हैं और हम तुमको शिकारी के जाल से आजाद कराने के लिये आये हैं।"

उसी समय शिकारी अपना जाल देखने के लिये वहॉ आया तो कछुआ चिल्लाया — "चलो यहॉ से जल्दी भागो।"

कौआ वहॉ से तुरन्त ही उड़ गया। हिरन का जाल कट चुका था सो वह भी अपने रास्ते भाग गया। चूहा पास की झाड़ियों में जा कर छिप गया। पर कछुए ने अपना एक पैर उठा कर जमीन पर रखा ही था कि शिकारी वहॉ आ गया।

शिकारी बोला — "अरे मेरा जाल तो खाली है। पर चलो कुछ न होने से तो एक कछुआ ही अच्छा है। आज मैं कछुए का ही सूप बना कर खाऊॅगा।"

कह कर उसने कछुए के पैर बॉधे ताकि वह भाग न सके, उसको उठाया और उसको ले कर घर चल दिया।

हिरन बोला — "अब हम क्या करें? तुम सब लोगों ने मेरी सहायता की अब हम सबको मिल कर कछुए की सहायता करनी चाहिये।"

सो हिरन भाग कर शिकारी के आगे हो लिया। वह उसके रास्ते में जा कर ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

कौआ भी उड़ा और उड़ कर शिकारी के आगे निकल गया और हिरन के सिर पर जा कर बैठ गया।

शिकारी ने रास्ते में मरा हुआ हिरन पड़ा देखा तो कछुए को जमीन पर रख दिया और हिरन को लेने चल दिया।

जैसे ही शिकारी ने कछुए को जमीन पर रखा चूहा दौड़ कर कछुए के पास गया और जिस रस्सी से शिकारी ने उसके पैर बॉध रखे थे उसे काट दिया।

कछुआ और चूहा रास्ते पर से हट कर जंगल में जा कर छिप गये। उधर कौआ हिरन के ऊपर से उड़ गया और हिरन भी शिकारी से बच कर उठ कर भाग लिया।

चारों दोस्त फिर से झील के किनारे पानी पीने के लिये मिले और वहॉ जा कर अपने पुराने दोस्तों को अपने बचने की कहानी सुनायी।

हिरन के भाग जाने के बाद शिकारी कछुए को लेने पहुॅचा पर कछुआ तो वहॉ से कभी का जा चुका था।

उसने कहा — "लगता है यहॉ तो कोई जादू काम कर रहा है। आज जंगल में भी मुझे केवल कछुआ ही मिल पाया औ यहॉ से तो वह भी भाग गया।"

और यह कहते हुए वह कोई और शिकार पकड़ने जंगल की तरफ चला गया।

शिकारी का कहना ठीक था। उस दिन जंगल में वाकई कोई जादू काम कर रहा था और वह था दोस्ती का जादू।

7 बन्दर और मगर[10]

मगर की पत्नी चिल्लायी — "देखो, मुझे एक बन्दर दिखायी दे रहा है। मुझे उसका कलेजा खाना है। मुझे जब तक अच्छा नहीं लगेगा जब तक तुम मुझे एक बन्दर ला कर नहीं दोगे।"

मगर अपनी पत्नी को खुश देखना चाहता था सो वह नदी में तैर गया और एक बन्दर को देखा जो नदी के किनारे बैठा था।

उसने बन्दर से कहा — "मैं एक ऐसे टापू को जानता हूँ जहाँ बहुत मीठे मीठे आम होते हैं।"

बन्दर ने मगर की मीठी मीठी आवाज सुनी तो वह बोला — "मुझे तो आम बहुत अच्छे लगते हैं। कहाँ हैं वे? मुझे उनको देखना है। क्या वे पके हुए हैं?

मैं उनको छूना चाहता हूँ। क्या वे सख्त हैं या मुलायम? क्या उनकी खुशबू बहुत अच्छी है? क्या वे मीठे हैं या खट्टे? मुझे दिखाओ कि वे कहाँ हैं।"

---

[10] The Monkey and the Crocodile – a story from Panchtantra, from India, Asia.
Adapted from the Web Site :
http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=148
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[My Note: This story is very common in the whole India and is heard and told in several flavors in other countries too. This flavor is quite different from the one which is very popular there.]

मगर मुस्कुराया और बोला — "आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उस टापू पर लिये चलता हूँ।" बन्दर मगर की पीठ पर बैठ गया और मगर पानी में तैर गया।

अचानक मगर पानी के अन्दर जाने लगा। जब बन्दर के शरीर को पानी ने छुआ तो वह घबरा कर बोला — "यह तुम क्या कर रहे हो?"

मगर बोला — "मेरी पत्नी तुम्हारा कलेजा खाना चाहती है इसलिये मैं तुमको उसके पास ले जा रहा हूँ।"

बन्दर बोला — "ज़रा रुको। तुमको तो मुझसे यह बात पहले ही कह देनी चाहिये थी कि तुमको मेरा कलेजा चाहिये। उसको तो मैं पेड़ पर अपने घर में ही छोड़ आया हूँ। अगर तुम मुझे मेरे घर वापस ले चलो तो मैं उसको तुम्हारे लिये ले आता हूँ।"

मगर इतना होशियार नहीं था कि वह बन्दर की बात समझ सकता सो वह किनारे की तरफ लौट पड़ा। वहाँ पहुँच कर वह बोला — "तुम जल्दी अपना कलेजा ले कर आओ तब तक मैं यहाँ तुम्हारा इन्तजार करता हूँ।"

मगर के किनारे पर पहुँचते ही बन्दर उसकी पीठ से कूद कर अपने पेड़ पर चढ़ गया और बोला — "अब तुमको बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ेगा। मेरा कलेजा तो मेरे शरीर के अन्दर है और वह वहीं रहेगा। मुझे अफसोस है कि मैं उसको बाहर निकाल कर तुम्हें नहीं दे सकता।"

मगर बेचारा अपने घर वापस लौट गया।

बाद में बन्दर उन नारंगी आमों के बारे में सोचता रहा कि वे आम कैसे होंगे। उसने कुछ भूरे पत्थर नदी में से निकले देखे तो उनके ऊपर से कूदता हुआ वह उस टापू पर चला गया।

आम बहुत रसीले थे। वह उनको तब तक खाता रहा जब तक कि उसका खूब पेट नहीं भर गया।

जब वह आम खा कर लौट रहा था तो उसने मगर को एक पत्थर पर लेटे हुए देखा। अब वह अपने घर कैसे वापस जाये क्योंकि उसको तो उस पत्थर के ऊपर से हो कर जाना था सो उसको एक तरकीब सूझी।

वह बोला — "हलो पत्थर।"

बन्दर ने पत्थर के जवाब का इन्तजार किया पर उसको कुछ सुनायी नहीं दिया।

बन्दर फिर बोला — "जब मैं तुमसे बात करता हूँ तो तुम मुझ से हलो कहते हो। आज क्या हुआ?"

मगर ने बन्दर की आवाज सुनी तो उसने सोचा — "अगर मैं उसका उसके सवाल का जवाब नहीं दूँगा तो उसको पता चल जायेगा कि मैं यहाँ हूँ और फिर वह मुझसे बच कर भाग जायेगा।

फिर मैं उसको अपनी पत्नी के लिये पकड़ नहीं पाऊँगा और मुझे तो उसको पकड़ना ही है इसलिये मुझे इसको जवाब तो देना ही चाहिये।"

सो उसने जवाब दिया — "हलो बन्दर।"

बन्दर बोला — "मगर तुम बिल्कुल भी होशियार नहीं हो। तुम्हें मालूम नहीं कि पत्थर बात नहीं किया करते।"

मगर बोला — "पर मैं कम से कम इतना होशियार हूँ कि तुम को पकड़ सकूँ। अब तुम मुझसे बच कर घर नहीं जा सकते।"

बन्दर बोला — "शायद तुम ठीक कहते हो। ठीक है मैं अपने आप ही तुम्हारे मुँह में आ जाता हूँ। तुम अपना मुँह खोलो और मैं तुम्हारे मुँह में कूद जाता हूँ।"

यह सुन कर मगर ने अपना मुँह खोल दिया। पर शायद तुम्हें पता होगा कि जब मगर अपना मुँह खोलता है तो वह अपनी ऑखें बन्द कर लेता है।

बस जब मगर ने अपना मुँह खोला तो अपनी ऑखें बन्द कर लीं और बन्दर उसकी नाक पर पैर रख कर नदी के उस पार पहुँच गया।

जब तुम जंगल में होते हो तो तुम बन्दर की हँसी और बातें अभी भी सुन सकते हो कि बहुत साल पहले उसने मगर को कैसे बेवकूफ बनाया।

इसके अलावा तुम मगरों को भी देख सकते हो कि वे किस तरह नदी के किनारे बन्दर का कलेजा खाने के लिये उसको पकड़ने की कोशिश में बैठे रहते हैं।

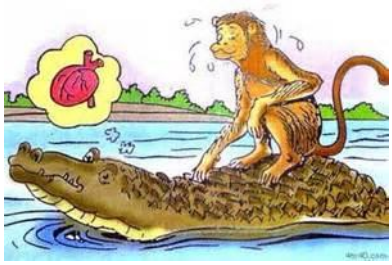

8 बैल जो शर्त जीत गया[11]

बहुत पहले की बात है कि एक किसान के पास एक बहुत ही ताकतवर बैल था। वह उसको बहुत प्यार करता था।

उसने उस बैल को जन्म से ही पाला पोसा था। वह उसको अपने हाथ से ही खाना खिलाता था, अपने हाथ से ही उसको नहलाता था और उसका सारा काम वह अपने हाथ से ही करता था।

उसने उसको खेत पर काम करना सिखाया। जब वे चावल के खेतों में काम करते थे और जब वे भारी बोझा बाजार ले जाते थे तो वह अपने साथ साथ उसके लिये भी गाता था।

बैल सोचता था कि "मेरा मालिक मेरे लिये बहुत ही दयालु है। वह मुझे बहुत अच्छी तरह से रखता है इसलिये मुझे भी उसके लिये कुछ करना चाहिये।"

सो उस रात बैल ने वह किया जो उसने पहले कभी नहीं किया था।

वह ज़ोर से बोला — "मालिक, कल फलॉ अमीर आदमी के पास जाना जबकि वह बाजार में दूसरों के सामने खड़ा हो और

[11] Ox Who Won the Bet – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=233
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

उसको कहना कि "मैं एक हजार चॉदी के सिक्के दॉव पर लगाता हूॅ कि मेरा ताकतवर बैल सौ पत्थर से भरी गाड़ियॉ खींच सकता है।"

अगले दिन वह किसान उस अमीर आदमी के पास गया और उससे पूछा — "क्या तुम किसी ऐसे आदमी को जानते हो जिसके पास बहुत ताकतवर बैल हो?"

वह अमीर आदमी बोला — "मेरे बैल इस देश में सबसे ज़्यादा ताकतवर हैं।"

किसान ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा बैल भी है जो पत्थर से भरी सौ गाड़ियॉ खींच सकता हो?"

अमीर आदमी बोला — "कोई भी बैल इतना बड़ा बोझ नहीं खींच सकता।"

किसान बोला — "मेरे पास एक बहुत ही ताकतवर बैल है। मैं एक हजार चॉदी के सिक्के दॉव पर लगाता हूॅ कि वह इतना भारी बोझा खींच सकता है।"

शर्त लग गयी।

किसान अपना बैल लाने के लिये अपने घर गया। आस पास के सारे गॉवों के लोग इस मुकाबले को देखने के लिये आये हुए थे। उस अमीर आदमी ने सौ गाड़ियॉ पत्थर से भर कर एक दूसरे से बॉध कर खड़ी की हुई थीं।

किसान ने अपने बैल को पहली गाड़ी से जोत दिया और चिल्लाना शुरू किया — "आ मेरे आलसी बैल खींच, यह गाड़ी खींच। चल ओ गधे।" और उसने बैल को एक डंडी मारी।

पर बैल हिल कर नहीं दिया। वह किसान की तरफ देखता रहा। किसान पहले कभी उससे इतने खराब तरीके नहीं बोला था। सो बैल ने सोचा वह अब उसकी सहायता नहीं करेगा।

सो किसान शर्त हार गया और उसको उस अमीर आदमी को एक हजार चॉदी के सिक्के देने पड़ गये।

उस रात किसान ने अपने बैल से कहा — "आज तुम्हारी वजह से मैं अपनी एक हजार चॉदी के सिक्कों की शर्त हार गया।"

बैल बोला — "तुमने मुझे हमेशा से अच्छे तरीके से रखा पर आज तुमने मुझे दूसरों के सामने मारा और मेरी बेइज़्ज़ती की इसी लिये मैंने तुम्हारी वे गाड़ियॉ नहीं खींचीं।"

किसान बोला — "मुझे इसका बहुत अफसोस है। अमीर आदमी अपने बैलों से इसी तरह से बात करता है सो मुझे लगा कि शायद मुझे भी ऐसे ही बोलना चाहिये।

पर मैं गलती पर था। मैंने तुम्हारे साथ सचमुच ही बुरा बरताव किया मुझे इसका फल मिलना ही चाहिये था। मुझे माफ कर दो।"

बैल बोला — "चलो माफ किया। अब तुम कल उस अमीर आदमी के पास फिर जाना और अबकी बार उससे दो हजार चॉदी

के सिक्कों की शर्त लगाना कि मैं दो सौ पत्थर भरी गाड़ियॉ खींच सकता हूँ।"

अगले दिन उस किसान ने उस बैल के गले में फूलों की एक डाली और उसको बाजार ले गया। उसने उस अमीर आदमी से फिर कहा — "मैं दो हजार चॉदी के सिक्कों की शर्त लगाता हूँ कि मेरा बैल पत्थरों से भरी दो सौ गाड़ियॉ खींचेगा।"

वह आदमी उसकी पहले दिन की हार याद करके हॅसा पर फिर उसकी शर्त मान गया। यह मुकाबला देखने के लिये जल्दी ही फिर से भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी।

बैल को गाड़ी में जोता गया तो किसान बोला — "चल मेरे सुन्दर ताकतवर बैल। खींच इन गाड़ियों को और लोगों को दिखा दे कि तू मेरे लिये क्या कर सकता है।"

बैल ने किसान की तरफ देखा और उसने गाड़ियों को खींचना शुरू किया। जल्दी ही वह बोझा चलने लगा और जल्दी ही आखिरी गाड़ी वहॉ आ कर खड़ी हो गयी जहॉ पहली गाड़ी खड़ी हुई थी।

भीड़ ने ताली बजायी और उस अमीर आदमी ने उसको दो हजार चॉदी के सिक्के दिये।

किसान और बैल खुशी खुशी घर चले गये। इस तरह बैल ने अपने अच्छे मालिक की सहायता की और यह सिखाया कि सभी से सबको अच्छा बरताव करना चाहिये।

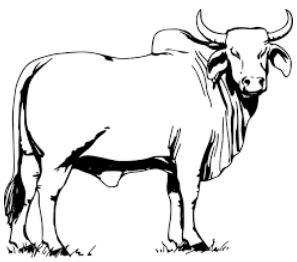

9 लड़ने वाले बटेर[12]

यह बहुत पहले की बात है कि एक चिड़िया पकड़ने वाला बटेर[13] पकड़ कर अपने परिवार का गुजारा करता था। रोज वह उनको पकड़ने के लिये जमीन पर दाने बिखेरता था।

पास की झाड़ियों से बहुत सारे बटेर दाना चुगने के लिये वहॉ आ जाते। वह उन सबको एक साथ पकड़ने के लिये एक जाल फेंकता। उनको पकड़ कर वह उन्हें बाजार में लोगों को खाने के लिये बेच देता।

एक बार एक बहुत ही होशियार बटेर ने अपने साथियों को बुलाया और उनसे कहा कि किसी तरह से उस चिड़िया पकड़ने वाले को हमको पकड़ने से रोकना चाहिये।

हमारे बहुत सारे दोस्त और परिवार के लोग पहले ही पकड़े जा चुके हैं। अब आगे यह सब और नहीं होना चाहिये।

अगली बार जब वह चिड़िया पकड़ने वाला तुम लोगों के ऊपर अपना जाल फेंके तब तुम लोग अपने अपने सिर उस जाल के छेदों के बाहर निकाल लेना। उसके बाद तुम लोग एक साथ उस जाल

---

[12] The Quarreling Quails – a story from Jaatak Tales of India, Asia.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=232
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[13] Translated for the word “Quail”. See its picture above.

को ले कर पास के जंगल में उड़ जाना। वहॉ जा कर उस जाल को किसी कॉटे वाली झाड़ी पर छोड़ देना और अपने आपको आजाद कर लेना।"

सारे बटेरों को यह प्लान ब्हुत अच्छा लगा। वे सब इस बात पर राजी हो गये कि एक साथ काम करने का विचार बहुत अच्छा था।

अगले दिन उस चिड़िया पकड़ने वाले ने रोज की तरह दाना फेंका। रोज की तरह बहुत सारे बटेर वहॉ दाना चुगने आ पहुॅचे।

कुछ देर बाद उसने उन चिड़ियों को पकड़ने के लिये उनके ऊपर अपना जाल फेंका तो बहुत सारे बटेरों ने अपना सिर उस जाल के छेदों में से बाहर निकाल लिया और उस जाल को ले उड़े।

चिड़िया पकड़ने वाले का तो यह देख कर आश्चर्य से मुॅह खुला रह गया कि किस तरीके से एक साथ काम करके वे सारे बटेर उसके जाल से आजाद हो गये थे।

वहॉ से उड़ कर उन्होंने वह जाल एक कॉटे वाली झाड़ी पर फेंक दिया और सब अपने अपने घरों को उड़ गये।

उस चिड़िया पकड़ने वाले को अपना जाल उस कॉटे वाली झाड़ी से बाहर निकालने में ही सारी शाम लग गयी। उस रात वह बिना कुछ लिये ही घर चला गया। आज उसके पास अगले दिन बेचने के लिये भी कुछ नहीं था।

अब रोज यही होता। वह चिड़िया पकड़ने वाला रोज दाना फेंकता, बटेर रोज दाना चुगने आते, वह रोज उन पर अपना जाल फेंकता पर बटेर उसके छेदों में से सिर बाहर निकाल कर जाल ले कर उड़ जाते। उड़ कर वे जाल झाड़ी में उसी कॉटों वाली झाड़ी में फेंक देते और फिर अपने अपने घरों को उड़ जाते।

एक दिन चिड़िया पकड़ने वाले ने सोचा कि ऐसा इसलिये हो रहा है क्योंकि ये सारे बटेर एक साथ मिल कर काम कर रहे हैं। अगर मैं इनमें आपस में लड़ाई करवा दूँ तो मैं इनको पकड़ने में कामयाब हो जाऊँगा।

सो उसने एक नयी तरकीब लगायी। अगले दिन उसने अपना दाना बजाय जमीन पर फैला कर डालने के जमीन पर एक छोटा सा ढेर बना कर रख दिया और एक तरफ बैठ कर बटेरों का इन्तजार करने लगा।

रोज की तरह बटेर वहॉ दाना खाने आ गये पर क्योंकि दाना ढेर में रखा था इसलिये वे एक दूसरे को धक्का दे कर ही दाना खा सकते थे। सो वे एक दूसरे को धक्का दे रहे थे और सबसे पहले दाना खाने की कोशिश कर रहे थे।

एक बटेर बोला — "तूने मुझे धक्का क्यों दिया?"

दूसरा बटेर बोला — "पहले तूने मेरे पैर पर पैर रखा।"

पहला बटेर बोला — "मैंने रखा मगर तुम्हारे पैर पर पैर रखने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो केवल दाना लेने की कोशिश कर रहा था।"

इसी तरह उन दोनों बटेरों में लड़ाई चल रही थी कि धीरे धीरे दूसरो बटेरों ने भी उन दोनों बटेरों की लड़ाई में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। कोई किसी की तरफ से बोल रहा था तो कोई किसी की तरफ से।

जब तक वे लड़ते रहे तब तक वह चिड़ियॉ पकड़ने वाला इन्तजार करता रहा। फिर अचानक उसने उन सबके ऊपर जाल फेंक दिया।

एक बटेर बोला — "अपना सिर जाल के छेद में से निकालो और फिर हम उड़ते हैं।" उसके दोस्तों ने भी यही कहा।

पर दूसरा बटेर बोला — "पहले तुम उड़ो। हम सारे लोग ही इस जाल को क्यों उठायें? तुम पहले इस जाल का भारी हिस्सा उठा कर ऊपर उड़ो उसके बाद हम उड़ेंगे।"

अब आधे बटेर तो बिना दूसरे बटेरों की सहायता के उस सारे जाल को ले कर उड़ नहीं सकते थे सो वे उस जाल को ले कर उड़ नहीं पाये।

और यही तो वह चिड़िया पकड़ने वाला चाहता था कि वे उसके जाल को ले कर न उड़ पायें और वह उनको पकड़ ले।

बस जब वे बटेर नहीं उड़ पाये तो उसने बटेरों से भरा अपना जाल इकट्ठा किया और सारे बटेरों को ले कर घर चला गया। अगले दिन वह उन सब बटेरों को बाजार में बेच आया।

इस तरह से आपस में फूट डलवा कर चिड़िया पकड़ने वाले ने बटेर पकड़े।

फूट पड़ने से एकता की ताकत कम हो जाती है इसलिये ताकतवर बनने के लिये आपस में भेद होते हुए भी एक हो कर रहना चाहिये तभी दूसरों से बचा जा सकता है।

एकता में बहुत ताकत होती है।[14]

[14] There is a saying in English also “Divide and rule.”

10 बातूनी कछुआ[15]

एक बार एक बहुत ही बातूनी कछुआ था। उसको बात करने का बहुत शौक था। वह चुप रहता ही नहीं था।

वह अपने दोस्तों से बात करता था। वह अजनबियों से बात करता था। वह तो सबसे बात करता था।

वह सुबह को बात करता था। वह दोपहर को बात करता था। वह शाम को बात करता था। वह चॉद में बैठे आदमी से बात करता था। वह हर समय हर किसी से बात हर तरह की बात करता था।

एक दिन उसने दूर रहने वाली दो बतखों से बात की तो वे बतखें बोलीं — "तुम हमारे घर आओ न। हम लोग एक बहुत ही सुन्दर झील में रहती हैं जिसके चारों तरफ बहुत सुन्दर सुन्दर पहाड़ हैं।

---

[15] The Turtle Who Could Not Stop Talking – a story from India, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=199
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[I have heard a similar story in my childhood too. It is given in the Book "Mere Bachapan Ki Kahaniyan" written by Sushma Gupta in Hindi language under the title "Baatoonee Kachhuaa". Another similar story is told in Somalia, Africa too – read it and other stories of tortoise in Hindi in the Book "Kachhuaa Aayaa Kachhuaa Aayaa-3" by Sushma Gupta written in Hindi language under the title "Baatoonee Kachhuaa".]

कछुआ बोला — "काश में तुम्हारे साथ जा सकता। मैं तुम्हारा घर देखना बहुत पसन्द करता। वहॉ हम लोग अच्छी तरह से बात भी कर सकते। पर जैसा कि तुम जानती हो मैं उड़ नहीं सकता।"

बतखें बोलीं — "कोई बात नहीं। हम तुमको उठा कर ले जायेंगे। पर तुम हमसे वायदा करो कि तुम रास्ते में बोलोगे नहीं और अपना मुॅह भी बन्द रखोगे। क्या तुम लम्बी उड़ान में इतनी देर तक चुप रह सकते हो?"

कछुआ बोला — "हॉ हॉ, मैं चुप रह सकता हूॅ। मैं चुप रहने में बहुत होशियार हूॅ।"

बतखें बोलीं — "तब ठीक है। हम तुमको कल अपने घर ले जायेंगे।"

पर यह तो सच नहीं था। कछुआ तो चुप रह ही नहीं सकता था। वह अपने दोस्तों से बात करता था। वह अजनबियों से बात करता था। वह तो सबसे बात करता था।

वह सुबह को बात करता था, वह दोपहर को बात करता था, वह शाम को बात करता था, वह चॉद में बैठे आदमी से बात करता था। वह हर समय हर किसी से हर तरह की बात करता था।

पर वे बेचारी बतखें तो उस कछुए को ठीक से जानती नहीं थीं जितना कि उसके दोस्त उसे जानते थे।

सो अगले दिन वे बतखें एक बड़ी सी डंडी ले कर वहॉ आयीं और कछुए से बोलीं — "देखो कछुए तुम इस डंडी को कस कर

अपने मुँह में पकड़ लो। हम दो लोग इसके दोनों सिरे अपने पंजों में कस कर पकड़ लेंगे और फिर तुमको उड़ा कर ले जायेंगे।

इस बीच में तुम अपना मुँह बिल्कुल नहीं खोलना नहीं तो तुम नीचे गिर जाओगे।"

कछुए ने उनको फिर विश्वास दिलाया कि इस उड़ान के दौरान वह अपना मुँह बिल्कुल बन्द रखेगा।

फिर उसने उस डंडी को अपने मुँह में कस कर पकड़ लिया। उधर दो बतखों ने उस डंडी को दोनों सिरों से पकड़ लिया और उसको ले कर उड़ चलीं।

जल्दी ही वे आसमान में ऊँचे पहुँच गयीं। कछुए ने भी उस डंडी को कस कर पकड़े हुआ था। कछुए ने सब कुछ जब ऊपर से देखा तो वह उसके बारे में कुछ कहना चाह रहा था कि नीचे कैसा लग रहा है पर बतखों की बात याद करके चुप ही रहा।

बतखें उस गॉव के ऊपर से भी उड़ीं जहॉ वह कछुआ रहता था। उस गॉव को देख कर कछुआ चिल्ला कर अपने सब गॉव वालों को यह बताना चाहता था कि वह आसमान में उड़ कर एक लम्बे सफर पर जा रहा था। पर फिर बतखों की बात याद करके फिर चुप रह गया।

पर उसको ऊपर उड़ता देख कर नीचे से बच्चे चिल्ला दिये — "देखो, ज़रा इस उड़ते हुए कछुए को देखो। यह तो अपने ही गॉव का कछुआ लगता है।"

एक दूसरा छोटा लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह हमारे गॉव का कछुआ नहीं हो सकता। वह तो बहुत बातूनी है। हमारे गॉव वाला कछुआ तो हवा में उड़ने पर इतनी देर तक डंडी पकड़े पकड़े चुप रह ही नहीं सकता।"

कछुए ने यह सब सुन लिया तो वह वहीं से चिल्लाया — "मैं अपना बात करना बन्द कर सकता हूँ। तुम क्या समझते हो मुझे।" पर वह अपनी बात तो कह ही नहीं सका।

उसने यह कहने के लिये जैसे ही अपना मुँह खोला कि वह नीचे गिर पड़ा। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह नदी के किनारे कीचड़ के एक बड़े से गड्ढे में गिरा इसलिये उसे ज़्यादा चोट नहीं आयी वरना वह मर भी सकता था।

बच्चे भागे भागे यह देखने के लिये आये कि कछुए को कहीं चोट तो नहीं लग गयी पर उनको तो कछुआ कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

कछुए को मालूम था कि उसने वहॉ बात की जहॉ उसको चुप रहना चाहिये था सो शरम के मारे वह उस कीचड़ के गड्ढे में ही धॅस गया और जाड़े भर सोता रहा।

जब वह अगले वसन्त में उठा तभी बच्चों ने उसे देखा कि उस के ऊपर के खोल में तो सब जगह दरारें पड़ गयी हैं और अब वह इतना बोलता भी नहीं है जितना वह पहले बोलता था।

अब वह चुप रहना सीख गया था। शायद ऊपर से गिर कर उसने अपना सबक सीख लिया था कि हर समय बोलना अच्छा नहीं होता।

11 एक पैसे में सब[16]

एक बार की बात है कि एक घाटी में एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। उसके एक ही बेटा था पर वह अपने उस अकेले बेटे से कुछ परेशान सा रहता था।

असल में उसका वह बेटा बहुत ही बेवकूफ सा था और कोई अक्ल का काम करना तो दूर कुछ और भी नहीं करता धरता था।

पर उसकी मॉ उसको बहुत प्यार करती थी। वह उसके लिये अच्छा ही अच्छा सोचती थी और अगर वह कोई गलत काम भी करता था तो उसकी गलती के लिये वह कोई न कोई बहाना ढूँढ कर उसे बचा लेती थी।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा हो गया और अब शादी के लायक हो गया। उसकी मॉ ने अपने पति से कहा कि अब बेटा बड़ा हो गया है सो वह उसके लिये कोई अच्छी सी लड़की ढूँढ कर उसकी शादी कर दे।

---

[16] All For a Paisa – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://www.storiestogrowby.org/story/all-for-a-paisa/
[My Note: This story with the same title in an extended form is given in the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. London: Kegan Paul, Trench Trubner & Co Ltd. 1893. This book is available in Hindi with me as "Kashmir ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta. And in English at https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

पर वह सौदागर अपने बेटे की बेवकूफियों पर इतना शरमिन्दा रहता था कि उसने अपने मन में यह निश्चय कर रखा था कि वह उसकी शादी कभी नहीं करेगा।

उधर उसकी मॉ उसकी शादी की बहुत चिन्ता कर रही थी। वह तो बहुत दिनों से उसकी शादी का सपना देख रही थी कि कब मेरा बेटा बड़ा होगा और कब मैं उसकी शादी करूँगी।

और अब उसका बेटा सारी उम्र कुँआरा बैठा रहे यह तो वह सोच भी नहीं सकती थी और न वह इसके लिये तैयार ही थी।

सो उसने अपने बेटे की शादी के लिये बहुत कोशिशें कीं। उसने अपने पति को उसकी अक्लमन्दी के कई लक्षण बताये कई अक्लमन्दी के काम बताये ताकि उसका पति उसकी शादी कर दे पर शादी करने की बजाय वह उसकी इन बातों से और ज़्यादा चिड़चिड़ा होता गया।

एक दिन जब उसकी पत्नी अपने बेटे की तारीफ किये जा रही थी तो वह चिड़चिड़ा हो कर अपनी पत्नी से बोला — "देखो तुम मुझसे यह सब कितनी बार कह चुकी हो पर तुमने इसे मुझे साबित करके कभी नहीं दिखाया।

क्योंकि मुझे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम कह रही हो उसमें ज़रा सा भी सच है। मॉऐं अन्धी होती हैं। खैर तुम्हारी सन्तुष्टि को लिये मैं उस बेवकूफ को एक मौका और देता हूँ।

तुम उसको बुलाओ और उसको यह पैसा दो और उससे कहो कि वह बाजार जाये और इस एक पैसे से कोई एक चीज़ ऐसी खरीद कर लाये जो खाने की भी हो और पीने की भी हो और चबाने की भी हो। उसको बागीचे में भी बोया जा सके और उसको गाय को भी खिलाया जा सके।"

मॉ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि अब कम से कम उसके बेटे को अपने आपको साबित करने का मौका तो मिलेगा। सो तुरन्त ही उसने अपने बेटे को बुलाया उसे पैसा दिया और उसके पिता की सारी बात उसको समझा दी।

बेटे ने भी उससे पैसा लिया और बाजार चल दिया। बाजार जाते हुए रास्ते में एक नदी पड़ती थी।

जब वह नदी के पास पहुँचा तो वह डर गया और सोचने लगा कि इस एक पैसे से वह ऐसा क्या खरीद सकता है जो खाने का भी हो और पीने का भी हो और चबाने वाला भी हो। बागीचे में बोने वाला भी हो और साथ में गाय के खाने वाला भी हो। जैसा कि उसकी मॉ ने कहा था।

यह तो बड़ा नामुमकिन सा काम है। यह सोच कर वह वहीं उदास सा खड़ा रह गया।

किस्मत से उसी समय वहॉ से एक लोहार की बेटी जा रही थी। उसने देखा कि नदी के किनारे एक लड़का उदास खड़ा है। उसने

उसको वहॉ इस तरह खड़े देख कर उससे पूछा कि क्या बात है वह इतना उदास क्यों खड़ा है।

उसने उस लड़की को वह सब बताया जो उसकी मॉ ने उससे कहा था। वह लड़की बहुत होशियार थी। वह बोली — "मैं तुमको बताती हूँ कि तुम क्या खरीदो। तुम जा कर एक पैसे का तरबूज खरीद लो।"

"तरबूज?"

"हॉ तरबूज।"

वह आगे बोली देखो तरबूज तुम्हारी मॉ की सब शर्तों को पूरा करेगा। वह खाने की चीज़ भी है और वह पीने की चीज़ भी है और वह चबाने की चीज़ भी है। वह जमीन में बोने के लिये भी कुछ देगा और साथ में वह गाय के खाने के लिये भी कुछ देगा।

तुम बाजार जा कर यह खरीद कर ले जा कर अपनी मॉ को दे देना मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी इस खरीद से बहुत खुश होंगी।

सो उसने ऐसा ही किया। जब उसकी मॉ ने अपने बेटे की अक्लमन्दी देखी तो वह तो बहुत खुश हुई। वह तुरन्त ही अपने पति के पास दौड़ी दौड़ी गयी और उस तरबूज को दिखा कर बोली देखो यह मेरे बेटे का काम है।

इत्तफाक से उनका बेटा भी वहीं अपनी मॉ के पीछे ही खड़ा था। वह तुरन्त ही अपनी मॉ के कान में फुसफुसाया "मॉ असल में उस लोहार की लड़की ने मुझे यह सलाह दी थी।"

मॉ बोली "चुप रह।"

खैर वह सौदागर अपने बेटे की अक्लमन्दी देख कर बहुत खुश हुआ कि वह उसकी पहेली का हल सोच सका।

लोहार के परिवार को शाम के खाने पर घर बुलाया गया। दोनों के माता पिता अपने बच्चों को लिये बहुत खुश थे। इस तरह उस लोहार की बेटी की शादी उस सौदागर के बेटे से हो गयी।

उसके बाद से वह लड़का एक मेहनती पति बन गया और वे दोनों खुशी खुशी रहे।

12 हाथी और चूहों का राजा[17]

एक बार की बात है कि भारत के एक गॉव में एक बहुत बड़ा भूचाल आया। सब गॉव वाले वह जगह छोड़ कर चले गये और चूहे उनके खाली किये घरों में चले गये। कई सालों तक चूहे अपने नये घरों में बहुत खुश थे।

पर जब हाथी वहॉ आये तो वहॉ सब कुछ बदल गया।

उस गॉव के पास ही एक झील थी। असल में हाथी कई सालों से उस झील से पानी पीते और उसमें नहाते चले आ रहे थे। जब उस गॉव में आदमी लोग रहते थे तब वे उस गॉव के चारों तरफ से हो कर जो एक तंग रास्ता जाता था वह रास्ता इस्तेमाल करते थे।

पर अब जबसे लोग वहॉ से चले गये थे तबसे वह छोटा वाला रास्ता इस्तेमाल करने लगे थे। और यह रास्ता गॉव के बीच वाली सड़क से हो कर जाता था।

उनके इस सड़क को इस्तेमाल करने से चूहे बहुत परेशान थे। क्योंकि उनमें से बहुत सारे चूहे जब सड़क पार कर रहे होते थे तो उनके पैरों तले आ कर कुचल कर मर जाते थे।

---

[17] The Elephants and the King of Mice – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/storytelling?rec_id=70
Adapted by Mike Lockett from Panchtantra Stories.
[It is similar to the story of "Sher Aur Chhoti Chuhiya" in which a tiny mice helps the lion to free from the net of a hunter.]

हाथी जब उस झील पर जाते थे तो बड़े बड़े झुंडों में एक दूसरे से मिलते हुए और बात करते हुए जाया करते थे।

क्योंकि वे सब आपस में बातें करते जाते थे तो उनके सिर ऊपर की तरफ होते थे। इसलिये उनको वे चूहे दिखायी ही नहीं पड़ते थे और वे बेचारे उनके पैरों तले कुचल कर मारे जाते थे।

हालॉकि इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी पर फिर भी वे बेचारे क्या करते क्योंकि उनको पता ही नहीं होता था। कहॉ इतना बड़ा हाथी और कहॉ बेचारा छोटा सा चूहा।

चूहों के राजा को पता था कि उन चूहों का मरना केवल एक एक्सीडैन्ट ही होता था हाथियों को उनको मारने का कोई इरादा नहीं था पर फिर भी चूहे तो मरते ही थे। और इस तरह से चूहों की गिनती रोज ब रोज कम होती जा रही थी।

वह इन चूहों की मौत को रोकना चाहता था सो एक दिन उसने हाथियों से इस बारे में बात करने का इरादा किया ताकि ऐसी मौतें और न हों।

चूहों का राजा हाथियों के पास पहुॅचा और उनके सरदार से बोला — "ओ हाथियों के सरदार, हम आपके झील जाने की जरूरत को समझते हैं कि आपको वहॉ पानी पीने और नहाने के लिये जाना होता है। पर इससे हमारे बहुत सारे लोग मारे जाते हैं।

मैं आपसे यह प्रार्थना करने आया हूॅ कि अगर आप और आपके बड़े और ताकतवर दोस्त झील जाने के लिये कोई दूसरा

रास्ता ले लें तो बहुत सारी ज़िन्दगियॉ बच जायेंगी। इसके बदले में शायद हम किसी दिन आपकी कोई सहायता कर सकें।"

हाथियों का सरदार यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "ओ चूहों के राजा तुम तो हमारे जितने बड़े हाथियों के लिये कुछ भी करने के लिये कितने छोटे हो। पर हम भी कोई बेरहम जानवर नहीं हैं। अगर हमसे किसी को कोई नुकसान पहुॅचा हो तो हमें बहुत दुख है।

हम तुम्हारी प्रार्थना की इज़्ज़त करते हैं सो झील जाने के लिये हम कोई दूसरा रास्ता ले लेंगे ताकि हम तुम लोगों को कोई नुकसान न पहुॅचा सकें।"

चूहों के राजा ने हाथियों के सरदार को उसकी दया के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चला गया। उसके बाद हाथियों के झुंड उधर से फिर कभी नहीं गुजरे।

इस बात को कुछ समय गुजर गया कि एक बार कुछ हाथी शिकारियों के जाल में फॅस गये। वे उनके जाल में बुरी तरह से उलझ गये थे। उन्होंने उस जाल में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वे किसी तरह भी न निकल सके।

जाल में फॅसे हुए उन हाथियों में एक उन हाथियों का सरदार भी था जिससे चूहों के राजा ने उनका झील पर जाने के रास्ते को बदलने की प्रार्थना की थी। उसको उस समय चूहे के राजा का किया हुआ वायदा याद आया।

उसने उन हाथियों में से एक हाथी को बुलाया जो जाल में नहीं फॅसे थे और उससे कहा कि वह झील के पास वाले गॉव में जाये और चूहों के राजा से जा कर कहे कि अब हमको उसकी सहायता की जरूरत है। अब वह अपना वायदा निभाये।

वह हाथी तुरन्त ही भागा भागा गॉव गया और चूहों के राजा को जा कर बताया कि उसके साथियों के साथ क्या हुआ था।

हाथियों की हालत के बारे में सुन कर चूहों के राजा ने अपने सब चूहों को बुलाया और कहा — "हमने जो हाथियों के सरदार से उनका रास्ता बदलने की प्रार्थना की थी उसके सुनने का बदला चुकाने का समय आ गया है। चलो हमें उनकी सहायता के लिये जल्दी से चलना चाहिये।"

सारे चूहे उस हाथी के पीछे पीछे चल दिये और वहॉ आये जहॉ उस हाथी के साथी जाल में फॅसे हुए थे। सारे चूहों ने मिल कर जल्दी से उस जाल की रस्सियॉ काट दीं और उन सब हाथियों को आजाद कर दिया।

हाथियों ने चूहों को अपनी आजादी के लिये धन्यवाद दिया। हाथियों के सरदार ने कहा — "मुझे अपनी उस बात को कहने का बहुत अफसोस है जब मैंने तुमसे कहा था कि तुम मेरे जितने बड़े जानवर की क्या सहायता करोगे तुम तो बहुत छोटे से हो।

उस समय मैं गलत था। आगे से मैं कभी किसी की शक्ल या साइज़ देख कर उसकी ताकत को नहीं जॉचूँगा।"

13 राजा और बेवकूफ बन्दर[18]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक राजा एक जंगल के पास अपने महल में रहता था। उसका महल जंगल के इतना पास था कि वह अपने महल से बन्दरों की बातें सुन सकता था।

जब वह बन्दरों की तरफ देखता तो उसे बहुत खुशी होती और बहुत अच्छा लगता।

एक दिन उसने सोचा कि वह एक बन्दर पालेगा सो उसने अपने शिकारियों को कहा कि वह एक बन्दर को पकड़ कर उसके पास महल ले कर आयें। वह उसको महल में रखेगा।

राजा के सलाहकार ने राजा से कई बार कहा कि बन्दर को महल में रखना कोई अच्छा विचार नहीं है। उसने कहा — "बन्दर एक जंगली जानवर होता है और किसी भी जंगली जानवर को महल में रखना खतरे से खाली नहीं।"

पर राजा की समझ में नहीं आया। अब राजा तो महल का मालिक था। उसका हुकुम तो हुकुम था। उसने हुकुम दे दिया था तो दे दिया था। उसको किसी सलाहकार की राय की जरूरत नहीं थी।

---

[18] The King and the Foolish Monkey – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=249
Adapted from a tale from Panchtanra by Mike Lockett.

राजा का शिकारी एक बन्दर पकड़ कर ले आया। महल में काम करने वालों से राजा ने कहा कि यह बन्दर उसका शाही बन्दर है। यह महल में कहीं भी आ जा सकता है और जो चाहे कर सकता है। कोई उसको रोके टोके नहीं।

पर वह बन्दर कोई सीखा हुआ बन्दर तो था नहीं सो महल में वह बहुत सारी बेवकूफी के काम किया करता था।

राजा का हुकुम मान कर कोई न तो उसको कुछ कहता था और न ही कोई उसको रोकता टोकता था। उनमें से कोई भी राजा का हुकुम टाल नहीं सकता था। वह बन्दर राजा के सोने के कमरे में भी जा सकता था।

एक दिन राजा ने कुछ देर के लिये सोने का सोचा जबकि बन्दर उसकी पहरेदारी कर रहा था। राजा सो गया। तभी एक मक्खी राजा के कमरे में आयी और राजा की छाती पर आ कर बैठ गयी।

अब बन्दर तो राजा की पहरेदारी कर रहा था सो अपना फर्ज निभाने के लिये बन्दर ने मक्खी को उड़ाने की कोशिश की तो उस समय तो मक्खी उड़ गयी पर वह फिर से वापस आ कर राजा के ऊपर बैठ गयी।

बन्दर ने उसको फिर उड़ाने की कोशिश की तो वह फिर उड़ तो गयी पर वह फिर वापस आ गयी। इस बार वह राजा के सिर पर आ कर बैठ गयी।

इस बात से बन्दर बहुत नाराज हुआ। उसने किसी ऐसी चीज़ को ढूँढने के लिये इधर उधर देखा जिससे वह उसको मार सके। वहीं पास में राजा का दंड[19] रखा हुआ था। उसकी नजर राजा के दंड पर पड़ी।

राजा का यह दंड सोने का बना था और उसमें जवाहरात जड़े हुए थे। राजा हमेशा उसको अपने पास इसलिये रखता था ताकि हर कोई यह जान ले कि वह ताकतवर था और सबका मालिक था।

पर अब तो वह दंड बन्दर के हाथ में था सो अब बन्दर ताकतवर था और सबका मालिक था। वह दंड उठा कर बन्दर ने उस मक्खी को भगाने के लिये उसके पीछे पीछे भागना शुरू किया।

वह बार बार उस दंड से मक्खी को मारने की कोशिश करता इसलिये वह उस दंड को कभी इस तरफ हिलाता तो कभी उस तरफ।

जब वह मक्खी राजा के सिर पर बैठी तो बन्दर ने वह दंड उधर की तरफ हिलाया तो मक्खी तो उड़ गयी। इस तरह दंड से मक्खी तो बच गयी पर राजा का सिर नहीं बच सका। वह राजा के सिर पर जा कर लगा।

राजा के नौकरों को बाद में पता चला कि राजा के सिर पर तो एक बहुत बड़ी गॉठ पड़ गयी थी और उसके सिर से तो खून निकल रहा था। राजा ने तुरन्त ही बन्दर को जंगल वापस भेज दिया।

[19] Translated for the word “Scepter”

राजा के सिर की वह गॉठ फिर कभी गयी नहीं सो उसको अपने सिर के लिये नया ताज बनवाना पड़ा। उसने फिर अपने सलाहकार की सलाह सुनने का भी इरादा किया।

उसके बाद राजा के सलाहकार ने राजा से यह कभी नहीं कहा कि "मैंने तो आपसे यह पहले ही कहा था।" क्योंकि यह तो राजा से कहने की बात नहीं थी पर हॉ उसने यह जरूर कहा कि "बेवकूफ दोस्तों से बच कर रहना चाहिये सरकार। क्योंकि वे आपको आपके दुश्मनों से भी ज़्यादा नुकसान पहुॅचा सकते हैं।"

14 पंचतन्त्र की एक कहानी[20]

एक ब्राह्मण की यह कहानी पंचतन्त्र[21] की एक बहुत ही मशहूर कहानी है। पंचतन्त्र की कहानियॉ ईसा से पूर्व तीसरी सदी में लिखी गयी थीं और उससे भी पहले की कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं पर आधारित थीं।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक भारत के एक गॉव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत गरीब था क्योंकि उसको करने के लिये कोई काम ही नहीं मिल पाता था। अक्सर वह और उसका परिवार भूखा ही रह जाता।

एक दिन उसने कुछ काम ढूँढने के लिये गॉव छोड़ने का विचार कर लिया कि वह कहीं बाहर जा कर काम ढूँढेगा। सो अगले दिन अपनी पत्नी और बच्चों के जागने से पहले ही वह उठा और घर छोड़ कर चला गया।

---

[20] A Panchtanra Story – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://www.candlelightstories.com/2009/03/27/the-panchatantra-a-folktale-from-india/#more-926 Adapted from a tale from Panchtanra.

[21] Panchtantra stories are one of the oldest stories written by a Braahman for his three prince students to teach them knowledge and wisdom in the conduct that would ensure his worldly success. Originally they were written in Sanskrit. Later they were translated into many languages. The tales, primarily about animals, are organized into five books on such topics as winning friends, losing property and waging war.

उसको नहीं मालूम था कि वह कहॉ जाये और क्या करे वह तो बस चल पड़ा। वह सारा दिन चलता रहा और एक घने जंगल में आ पहुॅचा।

वह थका हुआ था और भूखा और प्यासा भी था। उसने पानी पीने के लिये इधर उधर नजर डाली तो उसको एक कुॅआ दिखायी दे गया। उसने उस कुॅए में अन्दर झॉका तो उसने देखा कि उसमें तो एक चीता[22] एक बन्दर एक सॉप और एक आदमी थे।

उस आदमी को देखते ही चीता चिल्लाया — "ओ भले आदमी मेहरबानी करके मुझे बाहर निकालो ताकि मैं अपने परिवार के पास जा सकूॅ।"

ब्राह्मण बोला — "पर तुम तो चीते हो मुझे तुमसे डर लगता है। मैं तुम्हें इस कुॅए में से बाहर कैसे निकाल सकता हूॅ। यह मैं कैसे जानूॅ कि मेरे बाहर निकालते ही तुम मुझे खा नहीं जाओगे?"

चीता बोला — "ओ भले आदमी तुम मुझसे डरो नहीं। मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा। बस मेहरबानी करके तुम मुझ पर दया करो मेरी सहायता करो और मुझे इस कुॅए में से बाहर निकालो।"

[22] Translated for the word "Jaguar" – see its picture above.

ब्राह्मण ने सोचा शायद मैं इसकी सहायता कर सकता हूँ क्योंकि दूसरे पर दया करना तो हमेशा ही अच्छा होता है। सो उसने उस चीते को कुँए से बाहर निकाल लिया।

चीते ने बाहर आ कर ब्राह्मण को धन्यवाद दिया ओर बोला — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं कौन हूँ। मेरा नाम शेरसिंह है। तुम उधर वह पहाड़ देख रहे हो न मैं वहाँ एक गुफा में रहता हूँ। मुझे बहुत खुशी होगी अगर कभी तुम मेरे घर आओगे। हो सकता है कि मैं तुम्हारे उपकार का कुछ बदला चुका सकूँ।" यह कह कर चीता वहाँ से चला गया।

तभी उस ब्राह्मण ने सुना कि कुँए में से बन्दर उसको पुकार रहा था — "ओ पवित्र आदमी मेहरबानी करके मुझे भी इस कुँए में से बाहर निकालो।" ब्राह्मण ने उसे भी कुँए में से बाहर निकाल दिया।

बन्दर ने भी ब्राह्मण को धन्यवाद दिया और बोला — "अगर कभी तुम्हें खाने की जरूरत पड़े तो बस तुम मेरे घर चले आना। मैं वहाँ उस बड़े से पहाड़ के नीचे रहता हूँ। मेरा नाम बालि है।" यह कह कर वह भी वहाँ से चला गया।

अब ब्राह्मण ने सुना कि साँप उसको पुकार रहा था — "मेरी भी सहायता करो ओ भले आदमी। भगवान तुम्हारा भला करे।"

ब्राह्मण बोला — "तुम्हारी सहायता? तुम तो साँप हो। बाहर निकलते ही अगर तुमने मुझे काट लिया तो।"

सॉप बोला — "मैं तुम्हें कभी नहीं काटूँगा। तुम्हें मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। मेहरबानी करके मुझे बचा लो शायद मैं तुम्हारे कभी काम आ जाऊँ।"

सो उस ब्राह्मण ने उसको भी कुँए से बाहर निकाल लिया।

कुँए से बाहर आ कर सॉप बोला — "जनाब मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। अगर आप कभी भी किसी भी मुश्किल में पड़ जायें तो मुझे याद रखियेगा।

मेरा नाम नागेश है। बस मेरा नाम ले कर पुकार लीजियेगा "नागेश"। आप जहॉ भी होंगे मैं आपको ढूँढ लूँगा।" यह कह कर सॉप भी वहॉ से चला गया।

लेकिन वहॉ से जाने से पहले तीनों जानवरों ने उस ब्राह्मण को उस आदमी के बारे में बताया जो कुँए में पड़ा था कि उसकी सहायता नहीं करना।

शेरसिंह ने कहा था — "अगर तुम उसकी सहायता करोगे तो बस तुम यह समझ लो कि तुम अपने आपको मुश्किल में डाल लोगे।"

जैसे ही वे सब वहॉ से चले गये तो उसने भी उस आदमी से सहायता मॉगी। उस आदमी ने चिल्लाना शुरू किया कि मुझे भी बाहर निकालो।

ब्राह्मण दयावान था सो सब जानवरों के चेतावनी देने के बाद भी ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी और उसने उसको भी कुँए से बाहर निकाल लिया।

आदमी ने कुँए से बाहर निकल कर ब्राह्मण को धन्यवाद दिया और कहा — "मेरा नाम सेठ घनश्यामदास है। मैं एक सुनार हूँ और यही पास के शहर में रहता हूँ। अगर तुमको कभी भी किसी भी सहायता की जरूरत हो तो मेरे घर आने से हिचकिचाना नहीं।"

यह कह कर वह सुनार भी अपने घर चला गया और ब्राह्मण भी अपने रास्ते चल दिया।

पर उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी। उसको कहीं भी कोई भी काम नहीं मिल रहा था। आखिर उसने सोचा कि ऐसे कब तक चलेगा। वह कब तक इस तरह काम की खोज में घूमता रहेगा और भूखा मरता रहेगा उसको आत्महत्या कर लेनी चाहिये।

उसने सोचा कि वह किसी नदी में डूब कर आत्महत्या कर लेगा पर तभी उसको शेरसिंह चीता, बालि बन्दर, नागेश साँप और घनश्यामदास सुनार की याद आयी। तो उसको लगा कि उसको उनकी सहायता लेनी चाहिये।

वह सबसे पहले बालि बन्दर के पास गया। बन्दर उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसने उसका प्रेम से स्वागत किया और उसको बहुत ही स्वादिष्ट फल खाने को दिये।

ब्राह्मण ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया तो बन्दर बोला — "तुम्हारा यहॉ मेरे घर में हमेशा स्वागत है आदमी भाई।"

अब वह ब्राह्मण यह देखना चाहता था कि शेरसिंह चीता उसके साथ कैसा व्यवहार करता है सो बालि बन्दर से उसने शेरसिंह की गुफा का पता पूछा। बालि बन्दर ने उसको शेरसिंह की गुफा का रास्ता बता दिया।

जैसे ही शेरसिंह ने ब्राह्मण को अपनी गुफा की तरफ आते हुए देखा तो उसका स्वागत करने के लिये अपनी गुफा के बाहर तक आया और प्रेम से उसको अपनी गुफा में अन्दर तक ले गया।

शेरसिंह अपने जीवनदाता को भूला नहीं था। उसने उसको बहुत ही सुन्दर और कीमती जवाहरात से जड़ा गले का एक हार और कुछ और गहना दिया और दे कर बोला — "लो मेरी तरफ से तुम यह रखो एक छोटी सी निशानी मेरी कृतज्ञता और आदर की। इसे ले जाओ और अपनी ज़िन्दगी एक नये सिरे से शुरू करो।"

ब्राह्मण ने शेरसिंह को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसने सोचा कि उसकी यह यात्रा आखिर उसके लिये कुछ खुशकिस्मती तो ले कर आयी।

अब वह इस गहने को अच्छे दाम पर बेच कर अपने घर वापस लौट जायेगा। उसकी पत्नी उसको देख कर कितनी खुश होगी।

जो पैसा उसको इस गहने को बेच कर मिलेगा उससे वह और उसका परिवार एक नयी ज़िन्दगी शुरू करेंगे और आराम से रह लेंगे। पर इस गहने को बेचने में कौन उसकी सहायता करेगा?

और तब याद आयी उसको सेठ घनश्यामदास सुनार की। क्या वह उसकी सहायता करेगा? उसको याद आयीं सब जानवरों की चेतावनियॉ भी कि इस आदमी की सहायता मत करना नहीं तो मुश्किल में पड़ जाओगे पर फिर भी वह उसके पास चल दिया।

सुनार भी उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उससे पूछा — "ब्राह्मण देवता बताइये कैसे आना हुआ। मैं आपके लिये क्या करूँ।"

ब्राह्मण बोला — "सेठ जी मुझे आपकी सहायता की जरूरत है। मेरे पास ये कुछ गहने हैं। मैं इनको बेचना चाहता हूँ। आप मुझे इनके बेचने में मेरी सहायता करें और इनके अच्छे पैसे दिलवा दें।"

सेठ घनश्यामदास ने उन गहनों को हाथ में ले कर उनको उलट पलट कर देखा और बोला — "मैं आपकी सहायता जरूर करूँगा ब्राह्मण देवता पर पहले मैं इनको किसी दूसरे सुनार को दिखा लूँ।

तब तक आप मेरा यहीं इन्तजार करें। यह कुछ मिठाई नमकीन खायें और मैं इनको एक दूसरे सुनार को दिखा कर बस अभी लौट कर आया।"

सुनार ने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे उस ब्राह्मण की सेवा करने के लिये कहा। ब्राह्मण को अपनी पत्नी को सौंप कर वह वह गहना ले कर बाहर चला गया।

वहॉ से वह तुरन्त ही राजा के पास पहुँचा — "सरकार की जय हो। सरकार एक आदमी मेरे पास कुछ गहने ले कर आया है और मुझसे उनको बेचने के लिये कहता है।

पर ये गहने वह हैं जो मैंने राजकुमार के लिये बनाये थे जो अभी तक भी मिल नहीं पा रहे थे। जब मैंने ये गहने देखे तो मैंने इस आदमी को अपने घर में इन्तजार करने के लिये कहा और तुरन्त ही इन गहनों को दिखाने के लिये आपके पास दौड़ा आया।"

राजा चिल्लाया — "कौन है यह आदमी और कहॉ है वह? लगता है कि इस आदमी ने मेरे छोटे से बेटे को मार दिया है और उससे उसके जवाहरात छीन लिये हैं।"

"सरकार वह एक ब्राह्मण है और कृष्ण उसका नाम है। वह मेरे घर में बैठा हुआ है।"

राजा ने अपने सबसे भयानक सिपाहियों को बुलाया तो वे दौड़े चले आये। राजा ने उनको हुकुम दिया कि वे उस सुनार के घर जायें और उस आदमी को गिरफ्तार कर लें जो उस सुनार के घर में बैठा हुआ था। उसको गिरफ्तार करके राज्य के तहखाने में डाल दें।

राजा के नौकर तुरन्त ही सुनार के घर गये और उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। ब्राह्मण की तो कुछ समझ में ही नहीं आया कि यह सब हो क्या रहा था।

उसने चिल्ला कर सिपाहियों से पूछा — "यह सब तुम लोग क्या कर रहे हो और क्यों कर रहे हो? और मैंने क्या किया है मुझे कुछ बताओ तो सही।"

"तुमने हमारे राजकुमार का खून किया है और उसके जवाहरात चुराये हैं। इतने बड़े जुर्म के लिये तुम्हें मौत की सजा मिलेगी।"

ब्राह्मण तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया। इस समय उसको न तो बचने का ही कोई रास्ता दिखायी दे रहा था और न ही कोई वहाँ उसकी सहायता करने वाला था।

उसको गिरफ्तार करके राजा के तहखाने में डाल दिया गया जहाँ वह अपनी सजा का इन्तजार करने लगा। तब उसे याद आये नागेश के शब्द। सो उसने नागेश को पुकारा।

यकायक नागेश जिसकी उसने कुँए से निकाल कर जान बचायी थी वहाँ जादू की तरह से तुरन्त ही प्रगट हो गया। वह बोला — "हे भगवान। तुम ऐसे कैसे गिरफ्तार हो गये?"

ब्राह्मण बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो नागेश। मुझे एक ऐसे जुर्म की मौत की सजा मिली है जो मैंने किया ही नहीं।"

नागेश बोला — "मेरे पास एक तरकीब है। मैं रानी के कमरे में घुस जाता हूँ और रानी को काट लेता हूँ। मेरे काटे से वह बेहोश हो जायेगी। वे लोग कितनी भी कोशिश कर लें पर वह बेहोश ही रहेगी।"

"फिर?"

"जब तक कि तुम अपना हाथ उसके माथे पर नहीं रखोगे मेरा जहर उसके शरीर में ही रहेगा और वह होश में नहीं आयेगी।"

सो उसने ब्राह्मण को वहीं छोड़ा और रानी के कमरे की तरफ चल दिया। वह उसके कमरे में घुस गया और उसे काट लिया। उसके काटते ही रानी बेहोश हो गयी।

यह दुख की खबर कि रानी को सॉप ने काट लिया सारे राज्य में फैल गयी। पास और दूर सब जगहों से हकीम वैद्य उसका इलाज करने के लिये आये पर उनकी किसी भी दवा ने उस पर कोई काम नहीं किया। कोई भी रानी को होश में नहीं ला सका।

आखिर राजा ने घोषणा की कि "जो कोई भी रानी को होश में लायेगा हम उसको बहुत सारा इनाम देंगे।" इनाम की घोषणा सुन कर और बहुत सारे लोग रानी को होश में लाने के लिये महल आये पर उनमें से भी कोई भी उसको होश में नहीं ला सका।

यह खबर तहखाने में पड़े ब्राह्मण के पास भी पहुँची तो उसने तहखाने के पहरेदारों से कहा "मैं रानी को ठीक कर सकता हूँ अगर मुझे एक मौका दिया जाये तो।"

तहखाने के पहरेदार उसको तुरन्त ही राजा के पास ले गये। राजा उसको तुरन्त ही रानी के पास ले गया।

रानी अपने बिस्तर पर बिल्कुल बेजान सी पड़ी हुई थी सॉप के जहर से नीली। सॉप के जहर ने उसके सारे शरीर को नीला कर दिया था।

ब्राह्मण जा कर रानी के सिर के पास बैठ गया और धीरे से उसके सिर पर अपना हाथ रखा तो लो रानी तो धीरे धीरे होश में आ गयी और उठ कर बैठी हो गयी। उसके शरीर का जहर निकल चुका था।

राज्य में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। राजा तो बहुत ही खुश था। उसके तो खुशी के मारे ऑसू निकल पड़े। उसने ब्राह्मण को गले लगा लिया और बहुत धन्यवाद दिया।

तब ब्राह्मण ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी मुझे एक ऐसे जुर्म के लिये तहखाने में डाल दिया गया है जो मैंने किया ही नहीं।"

राजा ने पूछा — "तुम कहना क्या चाहते हो?"

ब्राह्मण ने तब उसको अपनी सारी कहानी बतायी। उसकी कहानी सुन कर राजा तो गुस्से से लाल पीला हो गया कि सुनार ने उस ब्राह्मण के साथ क्या किया था। उसने सुनार को गिरफ्तार करवा लिया।

राजा को उस ब्राह्मण के इस तरह से यानी बिना किसी कत्ल और चोरी के जुर्म के तहखाने में डालने के लिये बहुत अफसोस

हुआ। उसने एक हजार सोने के सिक्के दे कर उसको आदरपूर्वक विदा किया।

ब्राह्मण भी खुशी खुशी अपने घर चला गया और फिर सारी ज़िन्दगी अपने परिवार के साथ खुशी से रहा।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**